हरिभूमि
महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि
रोहतक, रविवार 29 मार्च 2026

11 सैद्धांतिक के साथ-साथ व्यवहारिक शिक्षा पर...

12 गैस किल्लत पर फूटा गुस्साः निजामपुर में सड़क जाम

SURAJ SCHOOL NARNAUL
ADMISSION OPEN 2026-27
(Classes : Nursery to 12th)
Tel : 9053539071, 9053539072
Affiliated to CBSE, NEW DELHI vide Affiliation No. 532145
Announces....
Now on Everyday
ADMISSION cum SCHOLARSHIP TEST
FULLY A.C. CAMPUS
with A.C. Transport Facility
• CCTV ENABLED • DIGITALISED SMART CLASSROOMS

Affiliated to CBSE
MR SCHOOL
MITTERPURA | ATELI
A Name of Dedication, Hardwork and Sincerity
॥ तमसो मा ज्योतिर्गमय ॥
FOUNDATION / JEE / NEET COACHING with Aakash Faculty Experts
ADMISSION OPEN Session 2026-27
MR SCHOOL Aakash Medical IIT-JEE Foundation
Aakash की FACULTY अब MR SCHOOL के साथ
MITTERPURA, NARNAUL (HR.)
9466945658, 9416903367
mrps530543@gmail.com www.mrpublicschool.com
NARNAUL ROAD, ATELI
8278085868, 9416903367
mrpsateli@gmail.com www.mrpsateli.in

मार्केट रेट से कम हैं दाम, किसानों का रुख आढ़तियों एवं व्यापारियों की ओर

जिले की छह मंडियों में तैयारी पूरी, सरकारी खरीद शून्य, एजेंसियां खाली हाथ

पहले दिन नहीं हुई सरसों की सरकारी खरीद

बाजार में 6700 के भाव सरकार दे रही 6200 रुपये प्रति क्विंटल

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

जिले में सरसों की सरकारी खरीद को लेकर 28 मार्च से शुरू होने वाली प्रक्रिया पहले ही दिन फुस्स साबित हुई। मंडियों में सरसों की आवक तो हुई, लेकिन वह प्राइवेट में आढ़तियों एवं व्यापारियों को बेची गई। इसके पीछे सबसे बड़ी वजह बाजार में मिल रहे ऊंचे दाम माने जा रहे हैं, जिसके चलते किसान सरकारी खरीद से दूरी बनाए हुए हैं। नारनौल मंडी में इस सीजन की अब तक 8653 क्विंटल सरसों प्राइवेट में बिक चुकी है और रेट 5600 रुपये से लेकर 6700 रुपये तक रहा है।

बता दें कि सरकार ने इस बार सरसों का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) 6200 रुपये प्रति क्विंटल तय किया है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 250 रुपये अधिक है। बावजूद इसके खुले बाजार में सरसों के भाव 6600 से 6700 रुपये प्रति क्विंटल तक पहुंच गए हैं। ऐसे में किसान स्वाभाविक रूप से निजी व्यापारियों को अपनी फसल बेचने में अधिक लाभ देख रहे हैं।

बाजार भाव ने बिगाड़ी सरकारी खरीद की गणितः इस समय 42 प्रतिशत तेल मात्रा वाली सरसों को मंडियों और निजी बाजार में करीब 6600 से 6700 रुपये प्रति क्विंटल तक भाव मिल रहा है, जबकि सरकार केवल 6200 रुपये दे रही है। यही अंतर किसानों को सरकारी खरीद से दूर कर रहा है। किसानों का साफ कहना है कि जब बाजार में ज्यादा दाम मिल रहे हैं तो वे सरकारी खरीद केंद्रों पर क्यों जाएं, जहां प्रक्रिया भी लंबी, जटिल और औपचारिकताओं से भरी होती है। मंडी के व्यापारी देवकीनंदन गोयल ने बताया कि हमारे यहां 42 प्रतिशत तेल वाली सरसों सैंपल के मुताबिक 6650 रुपये प्रति क्विंटल में खरीदी गई है। रेट तेल की मात्रा के अनुसार होगा। कोई भी किसान आ सकता है। कोई बायोमीट्रिक हाजिर लगाने या फोटो खिंचवाने की जरूरत नहीं है। सीधे सरसों बेच सकते हैं। सरसों साफ-सुथरी एवं सूखी हुई हो। नमी 8 प्रतिशत से ज्यादा न हो।

नारनौल। मंडी में सरसों चेक करती मंडी सचिव नुकुल यादव। फोटो : हरिभूमि

अधिकारियों ने लिया जायजा

नांगल चौधरी रोड स्थित जल महल के समीप बनी अनाज मंडी में शनिवार शाम मार्केट कमेटी की सचिव नुकुल यादव ने निरीक्षण किया। उन्होंने मंडी में पहुंचकर व्यवस्थाओं का जायजा लिया और मौजूद किसानों से बातचीत कर उनकी समस्याएं जानीं। मंडी सचिव यादव का कहना है कि मंडी आने पर किसान को गेट पास लेना होगा तथा सभी औपचारिकताएं पूरी करनी होंगी। हमने चार बायोमीट्रिक मशीनें लगाई हैं। दो गेट पर तथा दो मशीनें दुकान नंबर 152 एवं 176 पर रखी गई हैं।

तिथि अनुसार सरसों आवक

तिथि	क्विंटल	रेट (रुपये में)
17 मार्च	316	6200–6400
18 मार्च	878	6000–6400
19 मार्च	442	6195–6400
20 मार्च	772	5900–6603
21 मार्च	1453	5900–6670
22 मार्च		छुट्टी
23 मार्च	624	6200–6500
24 मार्च	905	5800–6600
25 मार्च	799	6100–6651
26 मार्च	1108	6025–6557
27 मार्च	1356	5600–6700
28 मार्च	1671	5795–6800

रेलवे का सख्त रुख : 72 घंटे में दुकानें हटाने का अल्टीमेटम

हरिभूमि न्यूज ⏭ मंडी अटेली

रेलवे विभाग ने रेलवे भूमि पर अतिक्रमण हटाने को लेकर 11 दुकानदारों को 72 घंटे का अंतिम नोटिस जारी किया है। नोटिस के बाद क्षेत्र में हलचल बढ़ गई है और प्रभावित दुकानदारों में नाराजगी देखी जा रही है। उत्तर पश्चिम रेलवे, नारनौल के वरिष्ठ अनुभाग कार्यकारी अभियंता कार्यालय से जारी नोटिस में कहा गया है कि संबंधित दुकानदारों द्वारा रेलवे भूमि पर अतिक्रमण किया गया है। इस मामले में न्यायालय ने 20 सितंबर 2023 को रेलवे के पक्ष में फैसला दिया था। इसके बावजूद अतिक्रमण नहीं हटाए जाने पर अब 3 दिन की अंतिम समय सीमा दी गई है, जिसके बाद विभाग कार्रवाई करेगा। वरिष्ठ अनुभाग अभियंता जितेंद्र गुर्जर ने बताया कि यह कार्रवाई कोर्ट के आदेश के अनुसार की जा रही है और दुकानदारों को पहले भी कई बार चेतावनी दी जा चुकी है। वहीं दुकानदारों का कहना है कि वे करीब 30 वर्षों से यहां दुकानें चला रहे हैं और नगर पालिका को किराया भी देते आए हैं।

मंडी अटेली। अटेली में दुकानों पर नोटिस चिपकाते हुए। फोटो : हरिभूमि

सपना डॉक्टर बनने का हो या इंजीनियर...
Aakash Medical | IIT-JEE | Foundations
अब काश नहीं, सिर्फ आकाश.
India's Trusted Leader in NEET & JEE Preparation
37 Years of Legacy 10 Lakh+ Success Stories
NEET MOCK TEST 2026
Date: 26th April 2026 (Offline)
Time: 2:00 PM - 5:00 PM Duration: 3 Hours
Turn preparation into measurable progress
✓ Real-Time Exam Simulation
✓ Benchmark your performance against 1.5+ lakh aspirants
✓ Performance Review & Rank Prediction
FEE ₹99/-
VISIT: NARNAUL CENTRE
CALL TO REGISTER 9467184560, 7988049903, 9416416945 ABD ASSUCIATES
1st Floor, No A1, Mohindergarh Road, opposite Panchayat Bhawan, Huda Sector, Narnaul, Haryana.

सिप+हिप+ टिप पैसा बनाने के साथ देते हैं लाइफ और सुरक्षा

सुझाव | बिजनेस डेस्क

आज के समय में केवल कमाई करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उस कमाई को सही दिशा में लगाना, सुरक्षित रखना और भविष्य के लिए बढ़ाना भी उतना ही जरूरी हो गया है। महंगाई, बढ़ते मेडिकल खर्च और जीवन की अनिश्चितताओं के बीच एक संतुलित वित्तीय योजना ही आपको मजबूत बना सकती है। यही कारण है कि 2026 में सिप, हिप और टिप का कॉम्बिनेशन स्मार्ट निवेशकों के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। यह तीनों मिलकर आपकी वेल्थ, हेल्थ और सिक्योरिटी तीनों को संतुलित करते हैं। इसलिए निवेशक इन्हें अपनाकर अपना भविष्य सरक्षित कर सकते हैं।

क्यों जरूरी है तीनों का कॉम्बो?

- आज की आर्थिक परिस्थितियों में एक ही विकल्प पर निर्भर रहना जोखिम भरा हो सकता है।
- महंगाई लगातार बढ़ रही है
- हेल्थकेयर खर्च तेजी से बढ़ रहे हैं
- जीवन में अनिश्चितता हमेशा बनी रहती है
- ऐसे में एक ऐसा प्लान जरूरी है, जो हर स्थिति में आपका साथ दे। सिप, हिप और टिप का कॉम्बो आपकी आय को बढ़ाने, बचाने और सुरक्षित रखने का संतुलन बनाता है। यही एक समझदार निवेशक की पहचान भी है।

सिपः छोटे निवेश से बड़ा फंड का फॉर्मूला

सिटेमैटिक प्लान यानी सिप हर महीने थोड़ी-थोड़ी रकम निवेश करने की रणनीति, जो समय के साथ बड़ा फंड तैयार करती है। इसमें आप 500 रुपये, 1000 रुपये या 5000 रुपये जैसी छोटी रकम से भी शुरुआत कर सकते हैं। सबसे बड़ी ताकत है "कंपाउंडिंग" यानी आपके पैसे पर भी पैसा बनना।

- लंबी अवधि में 10–12% तक रिटर्न की संभावना
- मार्केट के उतार-चढ़ाव का औसत असर
- अनुशासित निवेश की आदत
- जितना लंबा समय, उतना बड़ा फंड यही सिप की खासियत है। इसलिए इसे लॉन्ग टर्म वेल्थ क्रिएशन का सबसे भरोसेमंद तरीका माना जाता है।

हिप : आपकी सेविंग्स का बॉडीगार्ड

हेल्थ इंश्योरेंस प्लान यानी हिप को अक्सर लोग खर्च समझ लेते हैं, जबकि असल में यह आपकी बचत की सुरक्षा करता है। आज के दौर में एक गंभीर बीमारी या मेडिकल इमरजेंसी कुछ ही दिनों में लाखों रुपये खर्च करा सकती है। ऐसे में अगर आपके पास हेल्थ इंश्योरेंस नहीं है, तो आपकी सालों की जमा पूंजी खत्म हो सकती है। ऐसे में हेल्थ इंश्योरेंस आपकी संभाल करता है। इसलिए इसे लेना न भूलें। से अपातकालीन हालात में आपकी रक्षा करता है।

- अस्पताल का खर्च बीमा कंपनी उठाती है
- आपकी सेविंग्स और निवेश सुरक्षित रहते हैं
- मानसिक तनाव कम होता है
- विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि हर व्यक्ति को अपनी सालाना आय के कम से कम 50% के बराबर हेल्थ कवर जरूर लेना चाहिए। यानी अगर आपकी सालाना आय 10 लाख रुपये है, तो कम से कम 5 लाख का हेल्थ इंश्योरेंस होना चाहिए।

टिप : परिवार की आर्थिक सुरक्षा की ढाल

- टर्म इंश्योरेंश प्लान यानी आपके परिवार के लिए सबसे मजबूत वित्तीय सुरक्षा कवच माना जाता है। जीवन अनिश्चित है, और अगर कमाने वाले व्यक्ति के साथ कुछ अनहोनी हो जाए, तो परिवार पर आर्थिक संकट आ सकता है। ऐसे में टर्म इंश्योरेंस परिवार को आर्थिक सहारा देता है।
- कम प्रीमियम में बड़ा कवरेज
- परिवार के खर्च, बच्चों की पढ़ाई व लोन की सुरक्षा
- लंबी अवधि के लिए मानसिक शांति
- उदाहरण के तौर पर, 30 साल की उम्र में करीब 1 करोड़ रुपये का टर्म प्लान सालाना 10,000–12,000 रुपये में मिल सकता है। यह छोटी सी लागत आपके परिवार के भविष्य को सुरक्षित करने में बहुत बड़ी भूमिका निभाती है।

तीनों का संतुलन ही असली प्लानिंग

सिप, हिप और टिप तीनों अलग-अलग जरूरतों को पूरा करते हैं, लेकिन जब इन्हें एक साथ अपनाया जाता है, तो यह एक मजबूत वित्तीय ढांचा तैयार करते हैं।

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

निवेशकों के बीच असमंजस और चिंता का माहौल, कई लोग बाजार की गिरावट देखकर जल्दबाजी में अपने निवेश को निकालने का कर रहे विचार

विशेषज्ञों की सलाह : हड़बड़ाहट में पैसा न निकालें, निवेश बनाएं रखें, एसआईपी में बढ़ा सकते हैं निवेश

बाजार में उतार-चढ़ाव के बीच शांति व धैर्य जरूरी

ऐसे समय में धैर्य खोना निवेशकों के लिए नुकसान का कारण बन सकता है। इसलिए संयम से काम लें और निवेश बनाएं रखें। लंबी अवधि में निवेश आपको फायदा देकर ही जाएगा।

वैश्विक स्तर पर बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव खासतौर पर अमेरिका-इजराइल और ईरान के बीच जारी टकराव का असर अब दुनियाभर के शेयर बाजारों पर साफ नजर आने लगा है। लगातार हो रहे उतार-चढ़ाव के कारण निवेशकों के बीच असमंजस और चिंता का माहौल है। कई लोग बाजार की गिरावट देखकर जल्दबाजी में अपने निवेश को निकालने का विचार कर रहे हैं। हालांकि विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसे समय में घबराने की बजाय संयम और समझदारी से काम लेना ही सबसे बेहतर रणनीति होती है। उन्होंने कहा कि भारतीय बाजार के फंडामेंटल्स मजबूत हैं और लंबी अवधि के निवेशकों को आगे चलकर इसका फायदा मिल सकता है। निवेशक चाहें तो एसआईपी में निवेश बढ़ा सकते हैं, चूंकि लंबी अवधि में इसका लाभ मिलेगा। यह गिरावट कुछ समय के लिए हो सकती है। इसलिए लंबी अवधि का लक्ष्य लेकर शांति और धैर्य के साथ निवेश करते जाएं। बाजार के जानकारों ने निवेशकों को स्पष्ट संदेश दिया है कि बाजार में गिरावट के दौरान जल्दबाजी में शेयर बेचना नुकसानदेह हो सकता है। उनका कहना है कि वर्तमान में जो उतार-चढ़ाव दिखाई दे रहा है, वह केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक वैश्विक ट्रेंड है। दुनिया के कई बड़े बाजारों में 7% से 10% तक की गिरावट देखी जा रही है, जो असामान्य नहीं बल्कि बाजार की सामान्य प्रक्रिया का हिस्सा है। शेयर बाजार हमेशा सीधी रेखा में नहीं चलता। इसमें उतार-चढ़ाव आते रहते हैं, और यही इसकी प्रकृति है।

लंबी अवधि का नजरिया सफलता की कुंजी

विशेषज्ञों का मानना है कि शेयर बाजार में सफलता का सबसे बड़ा मंत्र है। लंबी अवधि का नजरिया। जब कोई निवेशक किसी कंपनी के शेयर खरीदता है, तो वह उस कंपनी के भविष्य में निवेश कर रहा होता है। ऐसे में रोजाना के उतार-चढ़ाव पर ध्यान देना जरूरी नहीं होता। अगर निवेशक 5 से 10 साल के दृष्टिकोण से निवेश करते हैं, तो बाजार के अस्थायी उतार-चढ़ाव का असर कम हो जाता है और बेहतर रिटर्न मिलने की संभावना बढ़ जाती है। इतिहास भी यही बताता है कि लंबे समय तक बाजार में बने रहने वाले निवेशकों को अक्सर अच्छा लाभ मिला है।

भारत की अर्थव्यवस्था मजबूत

- भले ही बाजार में अल्पकालिक गिरावट देखने को मिल रही हो, लेकिन भारत की आर्थिक स्थिति मजबूत बनी हुई है।
- देश की जीडीपी ग्रोथ दर स्थिर और सकारात्मक बनी हुई है
- महंगाई नियंत्रण में है, औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि हो रही है
- बिजली खपत और इंफ्रास्ट्रक्चर गतिविधियों में तेजी है
- ये सभी संकेत बताते हैं कि भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार मजबूत है। यही कारण है कि लंबे समय में बाजार की दिशा सकारात्मक रहने की उम्मीद की जाती है।
- भारत का शेयर बाजार भी लगातार विस्तार कर रहा है। निवेशकों की संख्या तेजी से बढ़ रही है और नए आईपीओ की भरमार इस बात का संकेत है कि बाजार पर लोगों का भरोसा कायम है।

एसआईपी से अस्थिरता में अवसर

- बाजार की गिरावट को अक्सर लोग नकारात्मक रूप में देखते हैं, लेकिन समझदार निवेशक इसे अवसर के रूप में भी देखते हैं।
- सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिए निवेश करने वालों के लिए यह समय और भी फायदेमंद हो सकता है।
- गिरावट के समय कम कीमत पर यूनिट्स मिलती हैं
- औसत लागत कम होती है
- लंबे समय में बेहतर रिटर्न की संभावना बढ़ती है
- विशेषज्ञों का मानना है कि जो निवेशक अपनी एसआईपी को जारी रखते हैं या उसमें बढ़ोतरी करते हैं, वे बाजार की अस्थिरता का लाभ उठा सकते हैं।

धैर्य और अनुशासन ही निवेश की असली ताकत

- शेयर बाजार में सफल होने के लिए केवल सही स्टॉक चुनना ही काफी नहीं होता, बल्कि सही व्यवहार और मानसिकता भी जरूरी होती है।
- हर गिरावट पर घबराना नुकसानदायक हो सकता है
- बार-बार खरीद-बिक्री से लागत बढ़ती है
- भावनात्मक फैसले अक्सर गलत साबित होते हैं
- इसलिए निवेशकों को चाहिए कि वे अपने वित्तीय लक्ष्यों के अनुसार योजना बनाएं और उसी पर टिके रहें।
- धैर्य और अनुशासन ही वे दो गुण हैं, जो लंबे समय में निवेशकों को सफलता दिलाते हैं।

वैश्विक संकट का असर

- वर्तमान समय में वैश्विक स्तर पर अनिश्चितता का माहौल है। युद्ध, आर्थिक नीतियों में बदलाव और अन्य अंतरराष्ट्रीय घटनाएं बाजार को प्रभावित करती हैं, लेकिन यह भी सच है कि बाजार इन परिस्थितियों से उबरने की क्षमता रखता है। इतिहास गवाह है कि हर बड़े संकट के बाद बाजार ने वापसी की है और नए उच्च स्तर भी हासिल किए हैं। ऐसे में निवेशकों को यह समझना जरूरी है कि मौजूदा गिरावट स्थायी नहीं है।

संयम रखें, रणनीति पर टिके रहें

- बाजार में उतार-चढ़ाव निवेश का स्वाभाविक हिस्सा है
- घबराकर निवेश निकालना अक्सर नुकसानदायक होता है
- लंबी अवधि का नजरिया और अनुशासन जरूरी है
- एसआईपी जैसे विकल्प अस्थिरता में भी अवसर देते हैं
- निवेश एक लंबी यात्रा है, जिसमें धैर्य और समझदारी सबसे बड़े साथी होते हैं। मौजूदा परिस्थितियों में घबराने के बजाय शांत रहकर अपनी रणनीति पर टिके रहना ही सही निर्णय साबित हो सकता है।

टैक्स बचाने और बचत सुरक्षित रखने की यह है मास्टर प्लानिंग

एजुकेशन लोन अब बोझ नहीं बन सकेगा स्मार्ट इन्वेस्टमेंट

जानकारी | बिजनेस डेस्क

"अगली बार जब एजुकेशन लोन लेने का विचार आए, तो इसे बोझ नहीं, बल्कि अपने उज्जवल भविष्य में किया गया एक समझदारी भरा निवेश मानें।

आज के समय में उच्च शिक्षा का खर्च लगातार बढ़ रहा है। इंजीनियरिंग, मेडिकल, मैनेजमेंट या विदेश में पढ़ाई हर क्षेत्र में फीस लाखों से लेकर करोड़ों तक पहुंच चुकी है। ऐसे में अधिकांश छात्र और अभिभावक एजुकेशन लोन को एक मजबूरी या बोझ के रूप में देखते हैं। लेकिन वित्तीय विशेषज्ञों की मानें, तो सही योजना और समझदारी के साथ लिया गया एजुकेशन लोन एक लायबिलिटी नहीं, बल्कि एक मजबूत निवेश साबित हो सकता है, जो आपके भविष्य को आर्थिक रूप से सुरक्षित बनाने में मदद करता है।

एजुकेशन लोन का सबसे बड़ा फायदा टैक्स बचत के रूप में मिलता है। इनकम टैक्स एक्ट की धारा सेक्शन 80ई के तहत, लोन पर चुकाए गए ब्याज पर पूरी तरह टैक्स छूट मिलती है। इसका मतलब यह है कि आप जितना ब्याज चुकाते हैं, उतनी ही आपकी टैक्सेबल इनकम कम हो जाती है। खास बात यह है कि इस छूट की कोई ऊपरी सीमा नहीं होती। यह सुविधा लोन चुकाना शुरू करने के बाद अधिकतम 8 वर्षों तक मिलती है।यानी आप पढ़ाई पूरी करने के बाद नौकरी शुरू करते ही टैक्स बचत का लाभ उठा सकते हैं, जिससे आपकी कुल वित्तीय योजना और मजबूत हो जाती है।

आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास

एजुकेशन लोन का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि यह छात्रों को आत्मनिर्भर बनाता है। जब छात्र अपनी पढ़ाई का खर्च खुद उठाते हैं, तो उनमें जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है। वे अपने करियर को लेकर अधिक गंभीर होते हैं और नौकरी मिलने के बाद अपने वित्तीय लक्ष्यों को लेकर सजग रहते हैं। यह अनुभव उन्हें जीवनभर काम आता है और आर्थिक रूप से मजबूत बनाता है।

समझदारी से लिया गया कर्ज, भविष्य की ताकत

एजुकेशन लोन को केवल कर्ज के रूप में देखना एक अधूरी सोच है। सही रणनीति के साथ यह एक ऐसा वित्तीय टूल बन सकता है, जो न केवल आपकी शिक्षा का रास्ता आसान करता है, बल्कि टैक्स बचत, क्रेडिट स्कोर सुधार और निवेश सुरक्षा के जरिए आपके भविष्य को भी मजबूत बनाता है।

क्रेडिट स्कोरः मजबूत आर्थिक पहचान की शुरुआत

युवाओं के लिए एजुकेशन लोन सिर्फ पढ़ाई का जरिया नहीं, बल्कि उनके वित्तीय जीवन की पहली सीढ़ी भी होता है। जब कोई छात्र समय पर अपनी ईएमआई भरता है, तो उसका क्रेडिट स्कोर मजबूत होता है। यह स्कोर भविष्य में होम लोन, कार लोन या बिजनेस लोन लेने में बेहद अहम भूमिका निभाता है। अच्छा क्रेडिट स्कोर होने से न केवल आसानी से लोन मिलता है, बल्कि कम ब्याज दर पर भी लोन मिल सकता है। इसके अलावा, खुद की पढ़ाई का खर्च उठाने से छात्रों में जिम्मेदारी और वित्तीय अनुशासन विकसित होता है, जो लंबे समय में उनके करियर और जीवन दोनों के लिए फायदेमंद साबित होता है।

निवेश की सुरक्षाः बचत को बढ़ने का मौका

अक्सर देखा जाता है कि माता-पिता बच्चों की पढ़ाई के लिए अपनी जीवनभर की बचत—जैसे फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी), पीएफ या रिटायरमेंट फंड तोड़ देते हैं। यह निर्णय भावनात्मक रूप से सही लग सकता है, लेकिन वित्तीय दृष्टि से हमेशा लाभकारी नहीं होता। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि इन बचतों को बाजार में निवेशित रहने दिया जाए, तो वे 12% से 15% तक का रिटर्न दे सकती हैं। वहीं, एजुकेशन लोन की ब्याज दरें अपेक्षाकृत कम होती हैं और कई मामलों में सरकारी सब्सिडी भी मिलती है। इस तरह लोन लेकर आप अपनी पूंजी को सुरक्षित रखते हुए उसे कंपाउंडिंग के जरिए बढ़ने का मौका देते हैं। यह रणनीति लंबे समय में अधिक लाभदायक साबित हो सकती है।

सही योजना जरूरी

- लोन लेने से पहले कोर्स और उसके करियर स्कोप का आकलन करें
- ब्याज दर और शर्तों की तुलना करें
- समय पर ईएमआई चुकाने की योजना बनाएं
- अनावश्यक रूप से अधिक कर्ज लेने से बचें

रिटायरमेंट के करीब हैं तो कर लें ये जरूरी काम

हर व्यक्ति की ख्वाहिश होती है कि वह रिटायरमेंट के बाद की जिंदगी बिना तनाव और आर्थिक चिंता के सुकून से बिताए। लेकिन यह तभी संभव है, जब समय रहते सही वित्तीय योजना बनाई जाए। अक्सर लोग नौकरी के दौरान तो बचत और निवेश करते हैं, लेकिन रिटायरमेंट के बिल्कुल करीब आकर कई जरूरी पहलुओं को नजरअंदाज कर देते हैं। अगर आपकी रिटायरमेंट अब ज्यादा दूर नहीं है, तो यह समय बेहद अहम है। इस दौरान लिए गए सही फैसले आपके आने वाले जीवन को सुरक्षित और संतुलित बना सकते हैं। आइए जानते हैं ऐसे 5 जरूरी वित्तीय काम, जिन्हें रिटायरमेंट से पहले जरूर पूरा कर लेना चाहिए।

1. कुल बचत और आय का सही आकलन करें

रिटायरमेंट के करीब पहुंचते ही सबसे पहले अपनी वित्तीय स्थिति का स्पष्ट आकलन करना जरूरी है। इसमें आपकी सेविंग्स, पेंशन, पीएफ, ग्रेच्युटी और अन्य निवेश शामिल होने चाहिए। इसके साथ ही पिछले कुछ वर्षों के खर्च का विश्लेषण करें और यह समझें कि रिटायरमेंट के बाद आपकी मासिक जरूरतें कितनी होंगी। महंगाई को ध्यान में रखते हुए भविष्य के खर्च का अनुमान लगाना भी बेहद जरूरी है।

2. गैर-जरूरी खर्चों पर लगाएं लगाम

रिटायरमेंट के बाद नियमित आय सीमित हो जाती है, इसलिए खर्चों पर नियंत्रण बेहद जरूरी हो जाता है। ऐसे में अपनी वर्तमान जीवनशैली का मूल्यांकन करें और फिजूल खर्चों को कम करने की आदत डालें। इसके अलावा, रिटायरमेंट के बाद नए कर्ज लेने से बचें। क्रेडिट कार्ड का अत्यधिक उपयोग भी भविष्य में आर्थिक दबाव बढ़ा सकता है। बेहतर होगा कि आप अपने सभी पुराने कर्ज समय रहते खत्म कर लें, ताकि रिटायरमेंट के बाद किसी तरह की वित्तीय बाधा न आए।

3. निवेश को विविध बनाएं

एक ही जगह निवेश करना हमेशा जोखिम भरा होता है। इसलिए अपनी बचत को अलग-अलग निवेश विकल्पों में बांटना समझदारी भरा कदम है। रिटायरमेंट से पहले आप अपने पोर्टफोलियो की समीक्षा करें और जरूरत के अनुसार बदलाव करें। सुरक्षित विकल्पों जैसे फिक्स्ड डिपॉजिट, पेंशन स्कीम या सीनियर सिटिजन सेविंग्स स्कीम में निवेश बढ़ाया जा सकता है, जबकि कुछ हिस्सा ऐसे निवेश में रखें जो महंगाई को मात दे सके। विविध निवेश से जोखिम कम होता है और रिटर्न संतुलित रहता है।

4. हेल्थ प्लान और मेडिकल फंड तैयार रखें

रिटायरमेंट के बाद स्वास्थ्य सबसे बड़ी प्राथमिकता बन जाता है। उम्र बढ़ने के साथ मेडिकल खर्च भी तेजी से बढ़ते हैं, इसलिए एक मजबूत हेल्थ इंश्योरेंस पॉलिसी होना बेहद जरूरी है। यदि आपके पास पहले से हेल्थ इंश्योरेंस है, तो उसकी कवरेज की समीक्षा करें और जरूरत के अनुसार बढ़ाएं। इसके साथ ही एक अलग इमरजेंसी मेडिकल फंड बनाना भी समझदारी है, ताकि अचानक आने वाले खर्चों से आपकी बचत पर ज्यादा असर न पड़े।

5. पैसे निकालने की रणनीति बनाएं

रिटायरमेंट के बाद सबसे बड़ी चुनौती होती है। बचत को लंबे समय तक कैसे चलाया जाए। इसके लिए पहले से ही एक स्पष्ट रणनीति बनाना जरूरी है। आपको यह तय करना चाहिए कि हर महीने कितनी राशि निकालनी है, किन निवेशों से पैसे निकालने हैं और किन्हें लंबे समय तक बने रहने देना है। सिस्टमेटिक विड्रॉल प्लान जैसे विकल्प इस मामले में मददगार हो सकते हैं। सही योजना के साथ आप अपने फंड को लंबे समय तक सुरक्षित रख सकते हैं और नियमित आय का प्रवाह बनाए रख सकते हैं।

उठापटक वाले बाजार में मल्टी एसेट फंड है बेहतर विकल्प

एक ही एसआईपी से स्टॉक्स, गोल्ड व बॉन्ड में निवेश

वर्तमान भू-राजनीतिक परिस्थितियों में अमेरिका-इजराइल-ईरान संघर्ष, वैश्विक महंगाई का दबाव और राजनीतिक अनिश्चितता शामिल हैं। इनको देखते हुए निवेशकों को मल्टी-एसेट रणनीति अपनानी चाहिए। । ऐसे माहौल में मल्टी-एसेट फंड निवेशकों के लिए एक आदर्श विकल्प बन जाते हैं, क्योंकि ये इक्विटी, डेट, कमोडिटी और कीमती धातुओं में निवेश का अवसर देते हैं। मल्टी-एसेट फंड ऑटोमैटिक रीबैलेंसिंग, प्रोफेशनल मैनेजमेंट और डायनेमिक एसेट एलोकेशन प्रदान करते हैं, जो खासतौर पर अधिक अस्थिरता के समय में उपयोगी होता है। साथ ही यह समय अत्यधिक आक्रामक होने का नहीं है, बल्कि एक संतुलित और विविधीकृत पोर्टफोलियो बनाए रखने का है, जो झटकों को सह सके और संभावित बढ़त में भी भाग ले सके।

पश्चिम एशिया में जारी जंग को एक माह हो गया है। इस दौरान बाजार में उठा-पटक जोरदार है। तेल की कीमतें आसमान छू रही हैं। बाजार दवाब में हैं। सोना और चांदी पहले चमके, फिर गिरे। बॉन्ड्स ने कुछ राहत दी है और जो निवेशक सिर्फ एक जगह पैसा लगाए बैठे थे, वो सबसे ज्यादा नुकसान में हैं। यही वो वक्त है जब एक पुरानी बात फिर साबित होती है कि किसी एक एसेट पर निर्भर नहीं रहना चाहिए फिर चाहे वो इक्विटी हो, डेट हो या सोना, लेकिन एक व्यक्ति कहां-कहां निवेश करे? आम निवेशक के पास क्या विकल्प हैं? इसलिए एक ऐसा निवेश का ऑप्शन आपकी सभी जरूरतों को पूरा कर सकता है। आप बस हर महीने पैसा डालते रहो और आपका पैसा हर जगह निवेश होता रहेगा। फिर शेयर हो या सोना। एसेट अलोकेशन का मतलब होता है कि आप अपना पैसा कहां-कहां डाल रहे हैं और इसका सबसे आसान रास्ता है मल्टी एसेट्स एलोकेशन फंड। बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि वर्तमान भू-राजनीतिक परिस्थितियों, राजनीतिक अनिश्चितता और वैश्विक महंगाई के दबाव को देखते हुए निवेशकों को मल्टी-एसेट रणनीति को प्राथमिकता देनी चाहिए, क्योंकि विविधीकरण (डाइवर्सिफिकेशन) अशांत समय में जोखिम को कम करने में मदद करता है।

केवल फंड स्तर पर विविधीकरण सही नहीं

विशेषज्ञों के अनुसार पिछले दिनों वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं और केंद्रीय बैंकों की खरीदारी के कारण सोने की कीमतों में तेजी आई है। चांदी को औद्योगिक मांग और कीमती धातु के रूप में उसकी पारंपरिक भूमिका दोनों का लाभ मिला है, जबकि इक्विटी बाजार उच्च विदेशी निवेश (एफआईआई इनफ्लो), मजबूत आय संभावनाओं और मैक्रो स्थिरता के कारण अपने सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया। इन सकारात्मक रुझानों के कारण इस श्रेणी ने निवेशकों को आकर्षित किया। लेकिन, अब हालात बदल चुके हैं। सोना और चांदी अपने उच्चतम स्तर से काफी नीचे आ चुके हैं। ऐसे में एक ही श्रेणी के निवेशक काफी दिक्कत में आ चुके हैं। इसके लिए अगर आपने अलग-अलग एसेट में निवेश किया होता तो बेहतर रहता। हालांकि, यह ध्यान रखना चाहिए कि केवल फंड स्तर पर विविधीकरण करना सही नहीं है, क्योंकि जरूरत पड़ने पर विभिन्न एसेट क्लास के बीच पुनः आवंटन करना मुश्किल हो जाता है। विशेषज्ञ बताते हैं कि 29 मल्टी-एसेट फंड्स में से अधिकांश फंड्स में 65% से अधिक निवेश इक्विटी में, 25% डेट में और 10% अन्य (जैसे सोना/कमोडिटी) में होता है। डीएसपी मल्टी एसेट एलोकेशन फंड एक अपवाद है, जिसमें लगभग 88% निवेश 'अन्य' श्रेणी में है। अधिकांश योजनाओं में एक जैसी संरचना होने से विविधीकरण और लचीलापन दोनों सीमित हो जाते हैं। चूंकि इक्विटी हिस्सा अक्सर लार्ज-कैप शेयरों में केंद्रित होता है, इसलिए कई बार ऐसे फंड्स में निवेश करने पर भी पर्याप्त विविधीकरण नहीं मिल पाता। वे सलाह देते हैं कि सिर्फ मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड्स पर निर्भर रहने के बजाय निवेशकों को अपने पूरे पोर्टफोलियो स्तर पर एसेट एलोकेशन तय करना चाहिए।

फ्लेक्सी-कैप और बैलेंस्ड एडवांटेज फंड्स भी विकल्प

इसके बावजूद मल्टी-एसेट फंड्स में निवेशकों की रुचि लगातार बढ़ रही है। मध्यम जोखिम प्रोफाइल वाले नए निवेशकों के लिए मल्टी-एसेट फंड्स के साथ फ्लेक्सी-कैप और बैलेंस्ड एडवांटेज फंड्स भी एक अच्छा विकल्प है। पिछले एक वर्ष में 24 मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड्स में से 8 ने दो अंकों (डबल डिजिट) का रिटर्न दिया, 14 ने एक अंक (सिंगल डिजिट) का रिटर्न दिया, जबकि 2 फंड्स ने नकारात्मक रिटर्न दिया। कई बार मल्टी-एसेट फंड्स पूर्व-निर्धारित एलोकेशन संरचना के कारण हर एसेट की पूरी क्षमता का लाभ नहीं उठा पाते। ये फंड्स अभी भी इक्विटी पर अधिक निर्भर रहते हैं और इक्विटी फंड्स से बहुत अलग नहीं हैं। यदि निवेशक पहले से ही अपने पोर्टफोलियो स्तर पर एसेट मिक्स तय कर रहे हैं, तो मल्टी-एसेट फंड जोड़ने से अनावश्यक दोहराव या एक ही एसेट में अधिक निवेश (कंसंट्रेशन) हो सकता है, खासकर जब फंड इक्विटी की ओर झुका हुआ हो। ऐसे निवेशकों को मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड्स से बचने पर विचार करना चाहिए और अपनी वित्तीय लक्ष्यों और जोखिम प्रोफाइल के अनुसार इक्विटी और डेट में अलग-अलग निवेश करना चाहिए। इससे बेहतर रिटर्न, दीर्घकालिक वृद्धि और संपत्ति निर्माण की आदर्श रणनीति बन सकती है। जबकि नए व आम निवेशकों के लिए मल्टी एसेट फंड एक बेहतर विकल्प रहता है। भले ही कुछ परिस्थितयों में इसमें रिटर्न कम हो सकता है, लेकिन जोखिम घटाने के लिए यह बेहतर विकल्प है। हाल के आंकड़े गवाह हैं कि इस फंड ने अनेक मामलों में बेहतर रिटर्न भी दिया है। इसके बावजूद निवेश हमेशा अपनी जोखिम क्षमता, निवेश अवधि और वित्तीय लक्ष्यों के आधार पर ही करना चाहिए।

राजकीय महिला महाविद्यालय में वार्षिकोत्सव व पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित

सैद्धांतिक के साथ-साथ व्यवहारिक शिक्षा पर भी ध्यान देने की जरूरत : विधायक

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली 319 छात्राओं को नकद पुरस्कार व सर्टीफिकेट देकर सम्मानित किया गया

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

नारनौल। कार्यक्रम में छात्राओं को सम्मानित करते हुए तथा मुख्य अतिथि विधायक ओमप्रकाश यादव को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए। फोटो : हरिभूमि

राजकीय महिला महाविद्यालय में वार्षिकोत्सव व पुरस्कार वितरण समारोह का किया गया। इस उपलक्ष्य पर विधायक एवं पूर्व मंत्री ओम प्रकाश यादव मुख्य अतिथि के तौर पर पहुंचे। वहीं विशिष्ट अतिथि के तौर पर नगर परिषद अध्यक्ष कमलेश सैनी शामिल हुई। इसके अलावा अन्य गणमान्य समाजसेवी महाविद्यालय के वार्षिक उत्सव पर पहुंचे। महाविद्यालय प्राचार्य प्रो आरपी सिंह ने आए हुए सभी अतिथियों का स्वागत किया तथा महाविद्यालय की वार्षिक गतिविधियों का ब्यौरा प्रस्तुत किया।

इस उपलक्ष्य पर मुख्य अतिथि विधायक ओमप्रकाश यादव द्वारा महाविद्यालय के लिए एक अत्याधुनिक लाइब्रेरी हॉल एवं नए टीचिंग ब्लॉक के निर्माण की स्वीकृति की घोषणा की गई। विधायक ओमप्रकाश यादव ने कहा कि छात्राएं आज किसी से भी कम नहीं हैं। विधायक ने सैद्धांतिक के साथ-साथ व्यवहारिक शिक्षा के ऊपर भी ध्यान देने की नसीहत दी, क्योंकि अंकों के प्रतिशत से कहीं ज्यादा मायने रखती है समाज में आपकी भूमिका। इसलिए ऐसे जिम्मेदार और मेहनतकश नागरिक के रूप में अपने आपको तैयार करें, ताकि परिवार एवं समाज में उचित तरह से अपनी भूमिका का निर्वहन कर सकें।

विशिष्ट अतिथि चेयरपर्सन कमलेश सैनी ने कहा कि छात्राएं अनुशासन में रहते हुए अपने माता-पिता का नाम रोशन करने का कार्य करें।

- अत्याधुनिक लाइब्रेरी हॉल एवं नए टीचिंग ब्लॉक के निर्माण की घोषणा की
- जिम्मेदार और मेहनतकश नागरिक के रूप में अपने आपको तैयार करें

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथियों में रिटायर्ड प्राचार्य डॉ ज्ञानचंद राणा, रिटायर्ड प्रिंसिपल डॉ यादराम यादव, प्रसिद्ध समाजसेवी अनिल शर्मा एवं भाजपा नेता नरेश झिमरिया मौजूद रहे।

छात्राओं ने बेहतरीन प्रदर्शन कर महाविद्यालय का नाम रोशन किया

प्राचार्य प्राचार्य डॉ आरपी सिंह ने वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा कि महाविद्यालय नीत नई ऊंचाइयों को छू रहा है। महाविद्यालय की आधारभूत संरचना का विकास हो या महाविद्यालय संस्थागत विकास की बात हो, हमेशा से ही विधायक का सक्रिय सहयोग एवं आशीर्वाद मिलता रहा है। शिक्षा का क्षेत्र हो, महाविद्यालय स्तर पर प्रदर्शन हो या विश्वविद्यालय स्तर पर प्रदर्शन हो, छात्राओं ने बेहतरीन प्रदर्शन कर अपना और महाविद्यालय का नाम रोशन किया है। महाविद्यालय के संरक्षक प्रो यशपाल शर्मा ने सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि इस तरीके के अवसर भविष्य में भी महाविद्यालय को देते रहे। कार्यक्रम में मंच का संचालन डॉ अंजू रानी एवं डॉ सुमन यादव द्वारा किया गया।

छात्राओं को किया गया सम्मानित

इस कार्यक्रम में विविध क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली लगभग 319 छात्राओं को नगद पुरस्कार व सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया, जिसमे मुख्य रूप से 26 छात्राओं को रोल ऑफ ऑनर तथा 26 छात्राओं को कॉलेज कलर एवं 100 यूनिवर्सिटी मेरिट व कॉलेज मेरिट की छात्राओं को सम्मानित किया गया। विधायक द्वारा प्राचार्य डॉ आरपी सिंह को प्रशंसा पत्र देकर सम्मानित किया गया। इसके अलावा महाविद्यालय के कार्यों में बेहतरीन योगदान के चलते महाविद्यालय से डॉ दलीप सिंह, डॉ सुनील कुमार, डॉ पवन कुमार, डॉ ओमप्रकाश, डॉ अश्वनी भारद्वाज, डॉ नीलम यादव (इंग्लिश), डॉ रमन, डॉ राधिका, डॉ संदीप (फिजिक्स), डॉ सुनीता जाखड़, डॉ हरमीत कौर, डॉ मनीषा सैनी, सुनील कुमार एलए, संदीप लाइब्रेरी अटेंडेंट, निशा यादव, विकास चौकीदार को भी विशेष प्रशंसा पत्र देकर सम्मानित किया गया।

खबर संक्षेप

सीएल स्कूल में लक्ष्य उत्सव का आयोजन

नारनौल। सीएल पब्लिक स्कूल में शनिवार को लक्ष्योत्सव का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम की थीम आज का प्रयास कल की पहचान रही। जिसकी शुरूआत तिलक व दीप प्रज्ज्वलन से हुई। इसके पश्चात प्राचार्य रविंद्र सिंह यादव ने स्वागत भाषण देकर सभी अतिथियों, अभिभावकों व विद्यार्थियों का अभिनंदन किया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि यूपीएससी एआईआर 847 प्राप्त नितेश कुमार रहे। संस्था के प्रबंधक निदेशक डॉ. अमित गुप्ता, अधिवक्ता सुखवर्षा गुप्ता, प्राचार्य रविंद्र सिंह यादव, मुख्य अध्यापिका मोनिका कौशल विशेष रूप से मौजूद रहे। मुख्य अतिथि नितेश कुमार ने विद्यार्थियों को संबोधित किया। उन्होंने अपनी मेहनत, संघर्ष और आत्मविश्वास की यात्रा साझा की और बच्चों को अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित रखने के लिए प्रेरित किया। इसके पश्चात प्रबंध निदेशक डॉ. अमित गुप्ता ने विद्यार्थियों को निरंतर प्रयास और अनुशासन का महत्व समझाया।

समिति ने वितरित की शिक्षण सामग्री

नारनौल। राव नेतराम शिक्षा समिति सलीमपुर अटेली मंडी की ओर से गांव भीलवाड़ा में दिव्यांग बच्चें गौरव पुत्र राजेन्द्र व निखिल पुत्र अजय को शिक्षण सामग्री वितरित की गई। राव नेतराम शिक्षा समिति सलीमपुर के सचिव कुबेर सिंह यादव ने बताया कि समिति की ओर से समय समय पर इस प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। जिससे संपूर्ण रूप से शिक्षण में असमर्थ बच्चों की हौसला बढ़ सकें। इस मौके पर भीलवाड़ा सरपंच सुमन देवी के प्रतिनिधि विक्रम सिंह, बीरसिंह, अनिल कुमार आदि उपस्थित रहें। उन्होंने समिति का धन्यवाद करते हुए इस प्रकार आयोजनों को बढ़ावा देने के लिए हौसला अफजाई की।

श्रीकृष्ण स्कूल ने मनाई 25वीं वर्षगांठ

नारनौल। श्रीकृष्ण सीनियर सेकेंडरी स्कूल भुंगारका में शनिवार को विद्यालय की 25वीं वर्षगांठ धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर विद्यालय परिसर को आकर्षक ढंग से सजाया गया तथा कार्यक्रम में विद्यार्थियों, अभिभावकों, स्टाफ व गणमान्य अतिथियों की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही। कार्यक्रम के दौरान विद्यालय के कर्मचारियों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया। वर्षों से सेवा दे रहे शिक्षकों व कर्मचारियों को स्मृति चिह्न व प्रशस्ति पत्र देकर उनका उत्साहवर्धन किया गया। विद्यार्थियों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस अवसर पर विद्यालय के फाउंडर धर्मपाल भी उपस्थित रहे। उन्होंने विद्यालय के 25 वर्षों के सफर को याद करते हुए सभी को प्रेरित किया और उज्ज्वल भविष्य की कामना की। विद्यालय के प्राचार्य वेदपाल यादव ने कहा कि यह 25 वर्षों का सफर समर्पण, मेहनत और विश्वास का परिणाम है। हमारा उद्देश्य केवल शिक्षा देना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को एक जिम्मेदार नागरिक बनाना है। वहीं चेयरमैन एडवोकेट राजपाल यादव ने कहा कि विद्यालय की यह उपलब्धि पूरे क्षेत्र के लिए गर्व का विषय है। हम बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ साथ अच्छे संस्कार देने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। अंत में सभी ने इस ऐतिहासिक अवसर को उत्साहपूर्वक मनाया और विद्यालय के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

यदुवंशी कॉलेज के सात विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय में किया टॉप

महेंद्रगढ़। सफलता प्राप्त करने वाले विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर रेवाड़ी द्वारा एमकॉम तृतीय सेमेस्टर का परीक्षा परिणाम घोषित किया गया, जिसमें यदुवंशी कॉलेज के सात विद्यार्थियों ने टॉप 10 सूची में स्थान बनाया। सूची में वर्षा पुत्री मूलचंद शर्मा ने प्रथम स्थान हासिल किया, ऋषभ पुत्र कमल शर्मा ने तीसरा, नेहा पुत्री मदनलाल ने चौथा, प्रियंका पुत्री विनोद कुमार ने पांचवां, राहुल पुत्र राकेश ने छठा, अंकित पुत्री सुमेर सिंह ने आठवां स्थान तो वहीं पूजा पुत्री विक्रम सिंह ने नौंवा स्थान हासिल करके न केवल अपना नाम रोशन किया, बल्कि संस्था के साथ-साथ अपने माता-पिता का नाम भी रोशन किया। संस्था चेयरमैन एवं पूर्व विधायक राव बहादुर सिंह ने कहा कि यह सफलता उनकी मेहनत अनुशासन और शिक्षकों के मार्गदर्शन का परिणाम है।

संस्था वाइस चेयरमैन एडवोकेट करण सिंह यादव, चेयरपर्सन संगीता यादव, ग्रुप डायरेक्टर विजय सिंह यादव, डॉ. प्रदीप यादव, प्राचार्य बबरूभान ने कहा कि इस तरह की उपलब्धियां अन्य विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनती है। कॉलेज प्रशासन ने सभी सफल विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना की।

सूरज कॉलेज की छात्राओं ने एमएससी फिजिक्स में लहराया परचम

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर रेवाड़ी द्वारा एमएससी फिजिक्स के तृतीय सेमेस्टर में सूरज कॉलेज के विद्यार्थियों ने परचम लहराया है। एमएससी फिजिक्स तृतीय सेमेस्टर की छात्रा सोनिका पुत्री सत्यवीर ने 9.31 एसजीपीए लेकर पूरे विश्वविद्यालय में दूसरा एवं कॉलेज में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी क्रम मे मीनू पुत्री बलवान ने 9.15 एसजीपीए लेकर विश्वविद्यालय में सातवां स्थान एवं कॉलेज में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। मुस्कान पुत्री नरेंद्र यादव ने 9.08 एसजीपीए लेकर कॉलेज में तृतीय, स्वाति पुत्री श्रीभगवान ने 9.00 एसजीपीए, सोनल यादव पुत्री अनिल कुमार एवं शबनम पुत्री मोबिन खान ने 8.69 एसजीपीए प्राप्त किया। इसी के साथ एमएससी फिजिक्स प्रथम सेमेस्टर की छात्रा सिमरन पुत्री विकास ने 8.77 एसजीपीए, अंशु पुत्री सत्यवान ने 8.46 एसजीपीए, प्रीति पुत्री अनिल कुमार ने 8.15 एसजीपीए प्राप्त किया। बीसीए तृतीय सेमेस्टर का छात्र पर्व शर्मा पुत्र मुकेश ने 9.75 एसजीपीए लेकर पूरे विश्वविद्यालय में दूसरा स्थान एवं कॉलेज में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी कोर्स की छात्रा सुमन पुत्री अरुण महला ने 9.04 एसजीपीए लेकर कॉलेज में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। तमन्ना पुत्री नरेन्द्र ने 9.00 एसजीपीए, टीना पुत्री मनोज कुमार ने 8.88 एसजीपीए, रोहित कुमार पुत्र राजकुमार ने 8.50 एसजीपीए, रजनी पुत्री मनोज कुमार ने 8.46 एसजीपीए प्राप्त किया। कॉलेज प्राचार्य डॉ. सुधाकर गुप्ता ने बताया कि कॉलेज का श्रेष्ठ परिणाम विद्यार्थियों के कठोर परिश्रम व शिक्षकों के मार्गदर्शन का परिणाम है।

विजय स्कूल में चेयरमैन स्कॉलरशिप टेस्ट आज

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

विजय इंटरनेशनल स्कूल में 29 मार्च को चेयरमैन स्कॉलरशिप कम एडमिशन टेस्ट आयोजित किया जाएगा। वाइस प्रिंसिपल अशोक कासनी ने बताया कि जिन बच्चों ने इस परीक्षा के लिए रजिस्ट्रेशन नहीं किया है, वो अपना रजिस्ट्रेशन परीक्षा के दिन विद्यालय में भी करवा सकते हैं। प्रिंसिपल नत्थू सिंह ने बताया कि इस टेस्ट के जरिए बच्चे न केवल अच्छी स्कॉलरशिप प्राप्त कर सकते हैं, बल्कि आकर्षक कैश प्राइज भी जीत सकते हैं। विद्यालय संरक्षक महेंद्र सिंह ने बताया कि इस दिन सभी रूट पर बस सुविधा उपलब्ध रहेगी और किसी भी विद्यालय का बच्चा इस आयोजन का लाभ उठा सकता है। उन्होंने बताया कि इस परीक्षा के लिए कोई भी रजिस्ट्रेशन चार्ज नही है। प्रत्येक कक्षा से पहले स्थान पर आने वाले विद्यार्थी को 5100 रुपये, दूसरे स्थान वाले को 3100 रुपये, तीसरे स्थान वाले को 2100 रुपये, चौथे स्थान वाले को 1100 रुपये, पांचवे स्थान वाले विद्यार्थी को 500 रुपये कैश प्राइज तथा छठे स्थान से दसवें स्थान पर रहने वाले विद्यार्थियों को वाटर बोटल प्रदान की जाएगी तथा फीस में भी छूट दी जाएगी। उन्होंने बताया कि इस दिन आसपास के सभी गांवों में बस सुविधा उपलब्ध रहेगी, बस संबंधित किसी भी जानकारी के लिए आप ट्रांसपोर्ट इंचार्ज से 9053008090 तथा अन्य किसी जानकारी के लिए विद्यालय प्रिंसिपल से 9053008081 पर सम्पर्क कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि क्षेत्र हित के इस कार्यक्रम में आप अपने बच्चों को जरूर हिस्सा दिलाएं।

विकास पर ध्यान

चेयरमैन विजय यादव टूमना ने बताया कि इस परीक्षा का मुख्य उद्देश्य गरीब प्रतिभावान छात्रों को बेहतर शिक्षा प्रदान करना है। हमारा विद्यालय बच्चों के सर्वांगीण विकास पर ध्यान देता है, जिसकी बदौलत विजय इंटरनेशनल स्कूल के बच्चों ने देश विदेश में अपने विद्यालय तथा क्षेत्र का नाम रोशन किया है।

नम आंखों से दी नायक अशोक कुमार को अंतिम विदाई

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

गांव बवानियां निवासी 35 वर्षीय सेना के जवान नायक अशोक कुमार को सेना की टुकड़ी व ग्रामीणों ने नम आंखों से अंतिम विदाई दी। नायक के दस वर्षीय बेटे मैरी ने जब अपने पिता के पार्थिव शरीर को मुखाग्नि दी तो हर आंख नम हो गई। जवान के पिता भरत सिंह भी भारतीय सेना से सेवानिवृत्त हैं। मैकेनाइज इंफेंट्री से नायब सूबेदार राजू लक्ष्मण राजपूत के नेतृत्व में आई सेना की टुकड़ी ने शहीद को सलामी दी गई। गांव बवानिया में उस समय शोक की लहर दौड़ गई जब सेना के जांबाज जवान नायक अशोक कुमार के निधन की खबर गांव पहुंची। ग्रामीणों के अनुसार छह माह पूर्व महेंद्रगढ़ के सतनाली मोड़ पर सड़क दुर्घटना में घायल हुए थे, जिसके बाद दिल्ली आर्मी अस्पताल में उपचार चल रहा था। शुक्रवार की सुबह दिल्ली के आर्मी अस्पताल में हार्ट फेल होने से उनका निधन हो गया। 35 वर्षीय अशोक कुमार वर्ष 2012 में आर्मी मेडिकल कोर जोधपुर में सिपाही पद पर भर्ती हुए थे। शनिवार को गांव बवानियां में पूरे सैन्य सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया गया। इस दौरान सबसे भावुक क्षण तब आया जब उनके 10 साल के बेटे मैरी ने अपने पिता को मुखाग्नि दी तो वहां मौजूद हर व्यक्ति की आंखें नम हो गई। अंतिम संस्कार के दौरान मिलिट्री स्टेशन से आई सेना की टुकड़ी ने शहीद को गार्ड ऑफ ऑनर और सलामी दी। पूरे गांव में शोक का माहौल रहा और बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने अंतिम यात्रा में शामिल होकर अपने वीर सपूत को श्रद्धांजलि अर्पित की। नायक अशोक कुमार के परिवार में अब पत्नी पूनम देवी और 10 वर्षीय बेटा मैरी है।

नारनौल। लोकप्रिय शिक्षाविद् पुष्पा देवी को श्रद्धांजलि अर्पित करते गणमान्यजन। फोटो : हरिभूमि

धनौंदा में मनाई स्व. पुष्पा देवी की पुण्यतिथि

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

लोकप्रिय शिक्षाविद्, अनेक शिक्षण संस्थानों की संस्थापक व प्रमुख समाजसेवी स्वर्गीय पुष्पा देवी की सातवीं पुण्यतिथि को परमार्थ दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर गांव धनौन्दा स्थित उनके पावन स्मृति धाम परमार्थ स्थल पर विश्व शांति कल्याण एवं पर्यावरण शुद्धि के लिए वैदिक यज्ञ का आयोजन किया गया। स्वर्गीय पुष्पा देवी के अनेक शिष्यों, प्रशंसकों और इलाके के गणमान्य व्यक्तियों ने हवन यज्ञ में आहुति डाली और उनकी प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी।

उपस्थित जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए यज्ञ ब्रह्मा संतलाल दायमा आर्य ने पुष्पा देवी के जीवन और कार्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पुष्पा देवी ने अपने जीवन में हमेशा सत्यनिष्ठा, कर्तव्यपरायणता और सदाचार का पालन किया, जो अपने आप में एक मिसाल है। उन्होंने नारी सशक्तिकरण, सामाजिक भाईचारा, शिक्षा प्रसार तथा सामाजिक धार्मिक कार्यों में बढ. चढ़कर भाग लिया तथा दान दिया। समाजवादी चिंतक रविन्द्र यादव ने पुष्पा देवी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन्हें महान शिक्षाविद् बताया। ब्रिलिएण्ट वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय धनौन्दा के हिन्दी प्रवक्ता आचार्य आशुतोष शास्त्री ने पुष्पा देवी के कार्यों पर प्रकाश डाला और कहा कि पुष्पा देवी विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य धारण करने वाली महान महिला थी।

ये रहे मौजूद

इस मौके पर प्रमुख समाजसेवी नेताजी अतरलाल, संतलाल आर्य, रविन्द्र यादव, डॉ. सतेन्द्र सिंह, डॉ. सुभाष यादव, नरेन्द्र कौशिक, मुकेश यादव, प्रवीण शर्मा, नवीन कुमार, आशुतोष शास्त्री, प्रहलाद सिंह, पवन धनखड़, मनजीत गौड़, अतरपाल, मुकेश तंवर, सतीश कुमार, परमजीत कौशिक, पूजा, पवित्रा, रेनू यादव आदि उपस्थित थे।

जागरूक

शिक्षकों ने घर-घर जाकर चलाया नामांकन अभियान

नए शैक्षणिक सत्र का शुभारंभ

अकबरपुर स्कूल में नए सत्र पर 1 अप्रैल को मनाई जाएगी प्लेटिनम जुबली

- विद्यालय क्षेत्र में शिक्षा का मजबूत केंद्र बनकर उभरा

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

अकबरपुर स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में नए शैक्षणिक सत्र का शुभारंभ इस वर्ष विशेष ऐतिहासिक गरिमा के साथ किया जाएगा। आगामी एक अप्रैल को विद्यालय परिसर में हवन यज्ञ और प्रसाद वितरण के साथ प्रवेश उत्सव का आयोजन होगा। यह अवसर इसलिए और भी खास बन गया है, क्योंकि विद्यालय अपनी स्थापना के 75 वर्ष पूर्ण कर प्लेटिनम जुबली वर्ष में प्रवेश कर रहा है। प्राचार्या सीमा यादव ने बताया कि प्रवेश उत्सव अभियान के तहत एक अप्रैल प्रातः स्कूल प्रांगण में विशेष हवन का आयोजन किया जाएगा।

विद्यालय के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए प्रवेश उत्सव प्रभारी डॉ. संजय शर्मा ने बताया कि इस संस्थान की नींव वर्ष 1950 में तत्कालीन पेप्सू सरकार के मुख्यमंत्री ज्ञानसिंह रारेवाला ने रखी थी। विद्यालय परिसर में स्थापित शिलालेख भी इस गौरवशाली शुरूआत का प्रमाण है, जिसमें 16 मार्च 1950 को लोअर मिडिल स्कूल के भवन के उद्घाटन का उल्लेख मिलता है। सात दशकों से अधिक समय में यह विद्यालय क्षेत्र में शिक्षा का मजबूत केंद्र बनकर उभरा है। प्लेटिनम जुबली वर्ष के उपलक्ष्य में विद्यालय पहुंचने वाले पूर्व विद्यार्थियों को प्रगतिशील शिक्षक ट्रस्ट की ओर से सम्मानित किया जाएगा। नए सत्र में नामांकन बढ़ाने के उद्देश्य से विद्यालय प्रशासन ने व्यापक कार्ययोजना तैयार की है। हवन कार्यक्रम के पश्चात विद्यालय की टीम अकबरपुर, तोताहेड़ी व नांगल पीपा सहित आसपास के गांवों में जागरूकता रैली निकालेगी। साथ ही शिक्षक घर घर जाकर अभिभावकों को सरकारी विद्यालयों में उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी देंगे।

नारनौल। गांव नांगल पीपा में नामांकन अभियान चलाते शिक्षक। फोटो : हरिभूमि

घर-घर गई टीम

प्रवक्ता डॉ. संजय शर्मा ने बताया स्कूल प्राचार्या सीमा यादव के नेतृत्व में स्कूल की टीमों ने गांव नांगल पीपा व अकबरपुर में डोर टू डोर नामांकन अभियान चलाया। इस टीम में बुलबुल शेरावत, महेन्द्र सिंह कम्प्यूटर शिक्षक, डॉ. संजय शर्मा शामिल थे। दूसरी टीम में प्रवक्ता विजय कुमार, प्रवक्ता विजयपाल सिंह ने अकबरपुर में घर घर जाकर नामांकन अभियान चलाया।

ये रहे मौजूद

डॉ. संजय शर्मा ने बताया कि इस विद्यालय ने क्षेत्र को अनेक नेता, मंत्री, आईएएस, आईपीएस अधिकारी, वकील, डॉक्टर, व्यावसायी दिए हैं, जिनमें पूर्व मंत्री डॉ. अभय सिंह यादव, डॉ. विनय सिंह यादव, अधिवक्ता बीएल शर्मा, पूर्व डीईओ वीरेंद्र यादव जैसे सैकड़ों विद्यार्थी शामिल रहे हैं।

खबर संक्षेप

करोड़ों की कृष्णावती योजना शुरू

मंडी अटेली। क्षेत्र के विकास को नई दिशा देने में कैबिनेट मंत्री आरती सिंह राव की सक्रिय भूमिका लगातार सामने आ रही है। पिछले एक वर्ष के दौरान उन्होंने न केवल रुके हुए विकास कार्यों को गति दी बल्कि नई योजनाओं को धरातल पर उतारकर यह संदेश भी दिया है कि सरकार जनहित के कार्यों के प्रति पूरी तरह प्रतिबद्ध है। इसी क्रम में राता कलां से मानपुरा तक कृष्णावती नदी के विकास के लिए दो करोड़ 71 लाख 66 हजार रुपये की राशि स्वीकृत होना क्षेत्र के लिए बड़ी उपलब्धि माना जा रहा है।

लंबे समय से लंबित इस परियोजना को अब मूर्त रूप दिया जा रहा है, जिससे क्षेत्र में जल संकट के समाधान की उम्मीद जगी है। जानकारी के अनुसार योजना के तहत नदी की चौड़ाई बढ़ाई जाएगी।

पत्नी की हत्या करने वाला पति गिरफ्तार

महेंद्रगढ़। थाना सदर की पुलिस टीम ने आपसी कहासुनी के चलते हुए विवाद को लेकर अपनी पत्नी की हत्या करने के मामले में त्वरित कार्रवाई कर आरोपित पति हरपाल निवासी बसई को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपित को न्यायालय में पेश कर पुलिस रिमांड पर लिया गया है। प्रारंभिक पूछताछ में यह तथ्य सामने आया है कि आपसी कहासुनी और विवाद के कारण आरोपित ने इस जघन्य वारदात को अंजाम दिया।

मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन

नारनौल। राज्य निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिले में पंचायती राज संस्थाओं के रिक्त पदों पर होने वाले आगामी उपचुनाव 2026 की तैयारियां तेज हो गई हैं। उपायुक्त एवं जिला निर्वाचन अधिकारी पंचायत कैप्टन मनोज कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि जिले के विभिन्न खंडों के अंतर्गत आने वाली संबंधित ग्राम पंचायतों के लिए मतदाता सूचियों का अंतिम प्रकाशन 27 मार्च को कर दिया गया है। यह प्रक्रिया आयोग की ओर से 18 फरवरी को जारी अधिसूचना के अनुसरण में पूरी की गई है। प्रशासन की ओर से स्पष्ट किया गया है कि निर्वाचन नियमावली के अनुसार तैयार की गई ये सूचियां अब जनसाधारण की जानकारी के लिए पूरी तरह उपलब्ध हैं।

भगवान महावीर जयंती 31 मार्च को

नारनौल। जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर जयंती 31 मार्च को सकल जैन समाज की ओर से विशेष पूजा अर्चना व विविध धार्मिक कार्यक्रमों के साथ धूमधाम से मनाई जाएगी। जैन समाज के प्रधान अजीत जैन ने बताया कि जयंती महोत्सव के अंतर्गत मंगलवार को प्रातः पांच बजे भक्तिभाव पूर्वक नगर के सभी प्रमुख मार्गों से होकर प्रभात फेरी निकाली जाएगी। प्रवक्ता सुरेन्द्र जैन ने बताया कि प्रातः सात बजे अभिषेक, शांतिधारा व नित्य नियम पूजन व प्रातः 10:15 बजे भव्य शोभायात्रा नलापुर स्थित शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर से प्रारंभ होकर शहर के विभिन्न मार्गों से होते हुए वापस नलापुर शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में समापन होगा।

जन परिवेदना समिति की बैठक 31 को

नारनौल। सहकारिता मंत्री डॉ. अरविंद कुमार शर्मा 31 मार्च को जिले के नागरिकों की समस्याओं के समाधान के लिए नारनौल पहुंचेंगे। वे स्थानीय लघु सचिवालय के सभागार में दोपहर एक बजे आयोजित होने वाली जिला लोक संपर्क एवं जन परिवेदना समिति की मासिक बैठक की अध्यक्षता करेंगे। इसमें पहले से निर्धारित 16 मामले सुनवाई के लिए रखे जाएंगे। उपायुक्त कैप्टन मनोज कुमार ने बताया कि गांव पाली का सरपंच ग्राम पंचायत, गांव कुलताजपुर का हिमाचल, गांव पृथ्वीपुरा की प्रवीण, मोहल्ला रावका का रमेश कुमार व अन्य क्षेत्रवासी, नांगल कालिया का मुकेश स्वामी आदि लोगों के मामले सुनवाई के लिए रखा जाएगा।

'चिराग योजना': कल तक आवेदन पर निजी स्कूलों की उदासीनता

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

हरियाणा शिक्षा विभाग द्वारा चिराग योजना (सीएम हरियाणा इक्वल एजूकेशन रिलीफ, असिस्टेंस एंड ग्रांट) के तहत शैक्षणिक सत्र 2026–27 के लिए आवेदन प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। इस योजना का उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के बच्चों को निजी विद्यालयों में शिक्षा का अवसर देना है, लेकिन जिले में निजी स्कूलों की सीमित भागीदारी ने अभिभावकों और विद्यार्थियों की चिंता बढ़ा दी है, क्योंकि इस योजना में प्राइवेट स्कूल स्वेच्छा से एडमिशन देंगे, अनिवार्य रूप से एडमिशन देना लागू नहीं किया गया है। जबकि इससे पहले 134–ए के तहत स्कूल की कुल सीटों का दस प्रतिशत कोटा आरक्षित रहता था।

बता दें कि शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार

नारनौल। हुडा सेक्टर स्थित जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय। फोटो: हरिभूमि

पात्र विद्यार्थी 30 मार्च तक विभागीय वेबसाइट पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। योजना के तहत कक्षा 6 से 12वीं तक के वे विद्यार्थी आवेदन के पात्र हैं, जिन्होंने पिछली कक्षा तक की पढ़ाई केवल सरकारी स्कूलों में की हो। आवेदन के बाद एक अप्रैल से 5 अप्रैल के बीच लॉटरी ड्रा के माध्यम से विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा। चयनित छात्रों को 15 अप्रैल तक संबंधित निजी विद्यालयों में प्रवेश लेना अनिवार्य होगा। चिराग योजना को सरकार की एक महत्वपूर्ण सामाजिक पहल माना जा रहा है, जिसका उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के बच्चों को बेहतर शिक्षा उपलब्ध कराना है। यह योजना शिक्षा के क्षेत्र में समानता लाने की दिशा में एक सकारात्मक कदम है, लेकिन जिले में निजी स्कूलों की सीमित भागीदारी और नामी स्कूलों द्वारा सीटें न दर्शाने की स्थिति इस योजना की प्रभावशीलता पर सवाल खड़े कर रही है। वहीं दूसरी ओर निजी स्कूलों का ठंडा रुख इस योजना के उद्देश्य को कमजोर करता नजर आ रहा है। यदि आने वाले दिनों में अधिक स्कूल इस योजना से नहीं जुड़ते हैं, तो बड़ी संख्या में पात्र विद्यार्थी इस अवसर से वंचित रह सकते हैं।

पारदर्शी प्रक्रिया से होंगे दाखिले

प्राइवेट स्कूलों का सीटें दर्शाना स्वैच्छिक है। चिराग योजना के तहत दाखिले पूरी तरह पारदर्शी तरीके से किए जाएंगे। ऑनलाइन आवेदन शुरू हो चुके हैं। सभी पात्र अभिभावक समय पर आवेदन करें और आवश्यक दस्तावेज सही ढंग से अपलोड करें। चयन प्रक्रिया लॉटरी सिस्टम के माध्यम से होगी, जिससे किसी प्रकार की पक्षपात की संभावना नहीं रहेगी। *-विश्वेश्वर कौशिक, जिला शिक्षा अधिकारी, नारनौल*

अभिभावकों में निराशा, नामी स्कूलों से उम्मीद टूटी

निजी स्कूलों की इस उदासीनता के कारण अभिभावकों और विद्यार्थियों में निराशा का माहौल है। कई अभिभावकों का कहना है कि नामी और बड़े स्कूलों ने सीटों का विवरण ही पोर्टल पर नहीं डाला, जिससे उनके बच्चों के वहां दाखिले की उम्मीद लगभग खत्म हो गई है। योजना का उद्देश्य भले ही समान शिक्षा अवसर उपलब्ध कराना हो, लेकिन सीमित सीटों और कम भागीदारी के कारण इसका लाभ बहुत कम विद्यार्थियों तक सिमटने की आशंका है।

स्कूलों की भागीदारी कम

मौलिक शिक्षा हरियाणा के महानिदेशालय, पंचकूला की ओर से सभी जिला शिक्षा अधिकारियों को इस संबंध में आदेश जारी किए गए हैं। नारनौल जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय को भी यह आदेश प्राप्त हो चुका है और प्रक्रिया को लागू किया जा रहा है। हालांकि, जमीनी स्तर पर स्थिति संतोषजनक नहीं दिख रही। जिले में करीब 250 मान्यता प्राप्त निजी विद्यालय हैं, लेकिन इनमें से केवल 37 स्कूलों ने ही अपने यहां उपलब्ध सीटों का विवरण विभागीय पोर्टल पर अपलोड किया है। इन 37 में भी दो स्कूल ऐसे हैं, जिन्होंने पोर्टल पर शून्य सीट दर्शाई है।

पेयजल की बकाया राशि का भुगतान करने की अंतिम तिथि 31 मार्च

पेयजल बर्बाद करने वाले उपभोक्ताओं पर होगी कार्रवाई : कार्यकारी अभियंता

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

पेयजल व सीवर उपभोक्ताओं के लिए अपने बिल जमा कराने का अंतिम मौका है। उपभोक्ता 31 मार्च तक अपने पेयजल व सीवर का शुल्क जमा कर सकते हैं। पेयजल शुल्क का भुगतान उपभोक्ता अपने मोबाइल के माध्यम से गूगल पे, फोन पे, पेटीएम, भीम यूपीआई, सरल केंद्र, विभाग की वेबसाइट या विभाग के कार्यालय में आकर भी कर सकते हैं। यह जानकारी देते हुए कार्यकारी अभियंता जितेन्द्र हुड्डा ने बताया कि मुख्यालय के निर्देशानुसार शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों के उपभोक्ताओं के बिल जनरेट कर उनकी सूचना मोबाइल पर भेजी जा चुकी है। विभाग की ओर से पेयजल बिलों की अदायगी की अंतिम तिथि 31 मार्च निर्धारित की गई है। इसके लिए पिछले तीन महीनों से विभागीय टीमें घर घर जाकर उपभोक्ताओं को पेयजल व सीवर के बिल भरने के लिए प्रेरित कर रही हैं। उन्होंने कहा कि उपभोक्ता 31 मार्च तक अपने बिलों का भुगतान अवश्य करें। उन्होंने कहा कि 31 मार्च के बाद जिन उपभोक्ताओं की ओर से बिलों का भुगतान नहीं किया जाएगा, उन पर सरचार्ज लगाने के साथ साथ विभागीय कार्रवाई भी शुरू कर दी जाएगी। इस विषय में 25 मार्च को आयोजित जिला जल एवं सीवरेज मिशन की बैठक में भी निर्णय लिया गया है। अतिरिक्त उपायुक्त तरुण कुमार की अध्यक्षता में हुई बैठक में निर्देश जारी किए गए कि उपभोक्ता अपने पेयजल बिलों का भुगतान करें, घरों के नलों पर टोंटी लगाएं तथा अवैध कनेक्शनों को काटा जाए, जो लोग विभाग की अनुमति के बिना मुख्य पाइप लाइन को नुकसान पहुंचाते हैं, उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने के आदेश भी दिए गए हैं।

चलाया जा रहा अभियान

जिला सलाहकार मंगतुराम सरसवा ने बताया कि पेयजल की बर्बादी रोकने व पेयजल व सीवर के बकाया बिलों की राशि एकत्रित करने के लिए शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में जनवरी माह से विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान का असर यह है कि उपभोक्ताओं ने अब अपने बिलों की अदायगी शुरू कर दी है, हालांकि ग्रामीण क्षेत्रों में प्रगति अभी भी धीमी है।

उन्होंने बताया कि नई पेयजल संचालन एवं रखरखाव नीति 2026 के तहत एक अप्रैल से पंचायतों को पेयजल व्यवस्था सौंपने का अभियान चलाया जाएगा, ताकि पंचायतें अपने स्तर पर पेयजल बिलों को एकत्रित कर उस राशि का उपयोग अपनी पंचायत में पेयजल व्यवस्था को मजबूत करने में कर सकें। इसके लिए सरकार की ओर से भी फंड उपलब्ध कराया जाएगा। साथ ही जो ग्राम पंचायतें 100 प्रतिशत घरों के नलों पर टोंटी लगवाएंगी और 100 प्रतिशत पेयजल बिलों का भुगतान सुनिश्चित करवाएंगी, उन्हें 15 अगस्त व 26 जनवरी के जिला स्तरीय कार्यक्रमों में जिला प्रशासन की ओर से सम्मानित किया जाएगा।

शहरी उपभोक्ता पेयजल बिल भरने में आगे

जानकारी के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों के उपभोक्ता पेयजल बिलों का भुगतान करने में आगे हैं। शहरी क्षेत्रों में नारनौल शहर में विभाग के पास कुल 16240 उपभोक्ता दर्ज हैं, जिन पर 116 लाख रुपये पेयजल व सीवर के बकाया थे, जिनमें से लगभग 75 लाख रुपये का राजस्व प्राप्त हो चुका है। इसी प्रकार महेन्द्रगढ़ शहर में 15864 उपभोक्ता हैं, जिनका 114 लाख रुपये बकाया था, जिसमें से लगभग 64 लाख रुपये का राजस्व एकत्रित किया जा चुका है। कनीना शहर में 2380 उपभोक्ता हैं, जिनका 17 लाख रुपये बकाया था, जिनमें से लगभग 12 लाख रुपये जमा हो चुके हैं। अटेली शहर में 2648 उपभोक्ता हैं, जिनका 19 लाख रुपये बकाया था, जिनमें से लगभग नौ लाख रुपये एकत्रित हो चुके हैं। वहीं नांगल चौधरी शहर में 2065 उपभोक्ता हैं, जिन पर लगभग 15 लाख रुपये का बिल बकाया है, लेकिन अभी तक किसी भी उपभोक्ता की ओर से बिल का भुगतान नहीं किया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों की बात करें तो नारनौल डिवीजन एक में कुल 58915 उपभोक्ता हैं, जिन पर 265 लाख रुपये पानी के बकाया हैं, जबकि इस वर्ष मात्र 55 हजार रुपये ही राजस्व प्राप्त हुआ है। इसी प्रकार नारनौल डिवीजन तीन अटेली में 42210 उपभोक्ता दर्ज हैं, जिन पर 186 लाख रुपये बकाया हैं और केवल दो लाख रुपये का राजस्व एकत्रित हुआ है। वहीं महेन्द्रगढ़ डिवीजन में 41483 उपभोक्ता दर्ज हैं, जिन पर 179 लाख रुपये बकाया हैं और केवल 45 हजार रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ है।

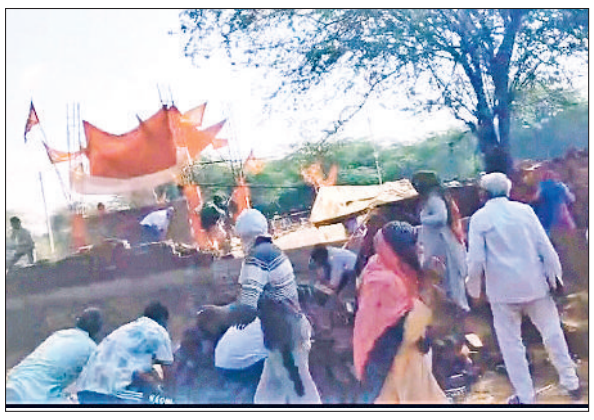

महेंद्रगढ़। आपस में पत्थर फेंकते ग्रामीण। फोटो: हरिभूमि

मंदिर निर्माण को लेकर जाटवास में हिंसक झड़प, 12 लोग घायल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

जिले के गांव जाटवास में मंदिर निर्माण को लेकर दो पक्षों के बीच विवाद इतना बढ़ गया कि मामला हिंसक झड़प में बदल गया। जानकारी अनुसार दोनों पक्षों के बीच जमकर ईंट, पत्थर चले, जिससे इलाके में अफरा तफरी का माहौल बन गया। जानकारी के अनुसार एक पक्ष मंदिर निर्माण कार्य में जुटा हुआ था, जबकि दूसरा पक्ष इसका विरोध कर रहा था। इसी दौरान कहासुनी बढ़ते बढ़ते झगड़े में बदल गई और दोनों ओर से ईंट पत्थर चलने लगे। इस झड़प में दोनों पक्षों के करीब 12 लोग घायल हो गए। घायलों को तुरंत उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया, जबकि कुछ की हालत गंभीर होने पर उन्हें हायर सेंटर रेफर किया गया है। विवाद के दौरान मूर्ति खंडित करने के भी आरोप लगाए गए हैं।

पुलिस बल तैनात

सूचना मिलते ही शहर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और हालात को काबू में करने के लिए भारी पुलिस बल तैनात किया गया। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए नारनौल पुलिस लाइन से भी अतिरिक्त पुलिस बल बुलाना पड़ा। फिलहाल पुलिस ने दोनों पक्षों को शांत कराते हुए पूरे मामले की जांच शुरू कर दी है। इलाके में एहतियातन पुलिस बल तैनात है और स्थिति पर लगातार नजर रखी जा रही है।

पंचायती भूमि से हटाया अवैध कब्जा

राता खुर्द में साढ़े 6 एकड़ गेहूं फसल सहित जमीन पंचायत के नाम

हरिभूमि न्यूज ▶▶ मंडी अटेली

क्षेत्र के गांव रातां खुर्द में पंचायती भूमि पर किए गए अवैध कब्जे को प्रशासनिक कार्रवाई के तहत हटाकर जमीन को दोबारा पंचायत के नाम दर्ज कर दिया गया है। इस कार्रवाई के बाद गांव में चर्चा का माहौल बना हुआ है।

जानकारी के अनुसार करीब साढ़े छह एकड़ पंचायती भूमि पर कुछ लोगों द्वारा अवैध रूप से कब्जा कर खेती की जा रही थी। यह मामला पिछले लगभग एक वर्ष से न्यायालय में विचाराधीन था। इसी माह सात मार्च को कोर्ट द्वारा पंचायत के पक्ष में फैसला सुनाए जाने के बाद खंड विकास एवं पंचायत कार्यालय अटेली नांगल की टीम ने कार्रवाई शुरू की थी।

एसईपीओ पूरन सिंह, ग्राम सचिव अनिल और सरपंच प्रवीन के नेतृत्व में टीम ने मौके पर पहुंचकर पहले चरण में करीब 10 एकड़ भूमि को कब्जा मुक्त कराया। उस समय चार एकड़ में खड़ी सरसों की फसल को कटवाकर पंचायत को सौंप दिया गया था। वहीं गेहूं की फसल पूरी तरह पकने के बाद शनिवार को उसे भी कटवाकर पंचायत के सुपुर्द कर दिया गया। इस प्रकार साढ़े छह एकड़ में खड़ी गेहूं की फसल सहित भूमि को पंचायत के नाम कर दिया गया।

मंडी अटेली। गेहूं की फसल को कटवाकर ट्रैक्टर से ले जाते हुए।

अवैध कब्जा सहन नहीं: पूरन सिंह

इस मौके पर एसईपीओ पूरन सिंह ने बताया कि पंचायत की भूमि सार्वजनिक उपयोग के लिए होती है और इस पर किसी भी प्रकार का अवैध कब्जा सहन नहीं किया जाएगा। उन्होंने चेतावनी दी कि भविष्य में यदि कोई पंचायत की जमीन पर कब्जा करने का प्रयास करेगा तो उसके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी। पंचायत ने गांववासियों से अपील की है कि वे सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा में सहयोग करें और किसी भी प्रकार के अवैध कब्जे की सूचना तुरंत प्रशासन को दें।

नामदेव समाज को एकजुट करने के लिए राष्ट्रीय बैठक 12 को

नारनौल। नामदेव समाज के सभी खापों व घटकों को एकजुट करने के लिए राष्ट्रीय स्तर का महासम्मेलन करने की तैयारी को लेकर आगामी 12 अप्रैल को 11बजे संत शिरोमणि नामदेव मंदिर नजफगढ़ दिल्ली 43 पानी की टंकी के पीछे आयोजित की जाएगी। उक्त जानकारी देते हुए रोहिल्ला टांक राजपूत नजफगढ़ सभा व रोहिल्ला टॉक महासभा दिल्ली के प्रधान दयानंद रोहिल्ला व वरिष्ठ समाजसेवी एवं व्यवसायी ज्ञानीराम सरोया ने बताया कि गत 15 मार्च की हुई बैठक में समाज के लोगों के उत्साह को देखते हुए राष्ट्रीय महासम्मेलन आयोजन का सपना साकार होता दिखाई दे रहा है। आज के समय में कोई भी समाज सामाजिक व राजनैतिक रूप से उन्नति नहीं कर सकता, जब तक वो संगठित नहीं होगा, जबकि समस्त देश की सभाओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं का उद्देश्य अपने समाज की उन्नति करना ही है। यदि संगठित होकर प्रयास किया जाएगा, तो सफलता हमारे कदम चूमेगी।

कैबिनेट मंत्री नरबीर के बिगड़े बोलों पर राव समर्थक ने जताई कड़ी आपत्ति

प्रेस कॉन्फ्रेंस में बोले जिला व्यापार मंडल के अध्यक्ष वैद्य किशन वशिष्ठ

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

गुरुग्राम जिले में पिछले दिनों आयोजित मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की रैली में कैबिनेट मंत्री राव नरबीर सिंह का मुख्यमंत्री को गुरुग्राम से चुनाव लड़ने का न्योता देने एवं यह कहना कि दक्षिण हरियाणा के मुख्यमंत्री के दावा करने वाले कुछ तो इस दुनिया से चले गए और कुछ जाने को तैयार हैं, पर वरिष्ठ भाजपा नेता एवं जिला व्यापार मंडल के अध्यक्ष वैध किशन वशिष्ठ ने कड़ी आपत्ति जताई है और कहा कि इससे पूरे दक्षिण हरियाणा के छत्तीस बिरादरी के लाखों लोगों की भावनाओं को ठेस पहुंची है।

उक्त आरोप उन्होंने अपार होटल में आयोजित एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में ने लगाते हुए कहा कि इससे स्पष्ट है कि दक्षिण हरियाणा के ताकतवर मंत्री का मानसिक संतुलन एवं याददाश्त ठीक नहीं है। इसलिए उन्हें बेहतर चिकित्सक की सेवा ले लेनी चाहिए।

उन्होंने याद दिलाते हुए कहा कि रेवाड़ी पहले महेंद्रगढ़ जिले का ही हिस्सा हुआ करता था और स्वर्गीय राव बीरेंद्र सिंह 1967 में हरियाणा के दूसरे मुख्यमंत्री दक्षिण हरियाणा से बने थे और लगभग सात महीने 10 दिन तक हरियाणा के मुख्यमंत्री रहे। इसलिए यह कहना कि दक्षिण हरियाणा से कोई मुख्यमंत्री नहीं रहा, यह मंत्रीजी का अल्प ज्ञान दर्शाता है और इसके लिए दक्षिण हरियाणा के 36 बिरादरी के लाखों लोगों से मंत्रीजी को माफी मांगनी चाहिए। उन्होंने कहा कि राव नरबीर सिंह का रामपुरा हाउस और रामपुरा हाउस के उत्तराधिकारी राव इंद्रजीत सिंह से विरोधाभास हो सकता है, लेकिन असलियत यह है कि इस क्षेत्र में विकास कार्यों को यदि किसी ने गति दी है तो पहले स्वर्गीय राव बीरेंद्र सिंह ने और अब केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह दे रहे हैं। वैद्य किशन वशिष्ठ ने कहा कि रामपुरा हाउस के वरिष्ठ नेता राव इंद्रजीत सिंह जो कि एक ईमानदार एवं समर्पण की प्रतिमूर्ति हैं।

नारनौल। पत्रकारवार्ता करते वरिष्ठ नेता वैद्य किशन वशिष्ठ। फोटो: हरिभूमि

बुकिंग के बाद भी नहीं मिला सिलेंडर, 'अनडिलिवर्ड' मैसेज से भड़के लोग

गैस किल्लत पर फूटा गुस्सा: निजामपुर में सड़क जाम

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

निजामपुर क्षेत्र में रसोई गैस सिलेंडरों की लगातार बनी किल्लत ने शनिवार को आक्रोशित रूप धारण कर लिया। सुबह करीब साढ़े नौ बजे गुस्साए ग्रामीण उपभोक्ताओं ने गैस एजेंसी के बाहर सड़क पर उतरकर जाम लगा दिया और जमकर विरोध प्रदर्शन किया। अचानक हुए इस हंगामे के चलते कुछ समय के लिए यातायात पूरी तरह बाधित हो गया और सड़क के दोनों ओर वाहनों की लंबी कतारें लग गईं।

मौके पर मौजूद लोगों के अनुसार, उपभोक्ताओं का गुस्सा कई दिनों से सुलग रहा था, जो शनिवार को फूट पड़ा। आरोप है कि अधिकांश उपभोक्ताओं ने पहले ही गैस सिलेंडर की बुकिंग करवा रखी थी और उन्हें कंपनी की ओर से कन्फर्मेशन मैसेज भी मिल चुका था। इसके बावजूद 3–4 दिन बाद उनके मोबाइल पर 'अनडिलिवर्ड' का मैसेज भेज दिया गया, जिससे वे गैस सिलेंडर से वंचित रह गए। इस स्थिति को लेकर उपभोक्ताओं ने एजेंसी पर लापरवाही और धोखाधड़ी जैसे गंभीर आरोप लगाए। उनका कहना था कि एक ओर उन्हें बुकिंग कन्फर्म होने का संदेश दिया जाता है, वहीं दूसरी ओर बिना किसी सूचना के डिलीवरी रद्द कर दी जाती है। इससे आम उपभोक्ता को भारी परेशानी झेलनी पड़ रही है। स्थिति तब और बिगड़ गई, जब कई लोग सुबह से ही गैस एजेंसी पर पहुंचकर घंटों लाइन में खड़े रहे, लेकिन उन्हें सिलेंडर नहीं मिला। खाली हाथ लौटने को मजबूर इन उपभोक्ताओं का गुस्सा बढ़ता गया और आखिरकार उन्होंने सड़क जाम कर विरोध जताया। महिलाओं और बुजुर्गों की मौजूदगी ने भी इस विरोध को और प्रभावी बना दिया। हालांकि फिलहाल स्थिति नियंत्रण में है, लेकिन ग्रामीण उपभोक्ताओं में नाराजगी अभी भी बनी हुई है। लोगों का कहना है कि यदि गैस आपूर्ति व्यवस्था जल्द दुरुस्त नहीं की गई तो वे दोबारा आंदोलन करने को मजबूर होंगे। उन्होंने प्रशासन और संबंधित विभाग से मांग की है कि गैस वितरण प्रणाली को पारदर्शी और नियमित बनाया जाए।

नारनौल। गैस किल्लत के विरोध में रोड जाम करते उपभोक्ता।

जाम स्थल पर पुलिस पहुंची

हंगामे की सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस और डायल 112 की टीम मौके पर पहुंची। पुलिस ने बातचीत कर समझाने के जरिए स्थिति को शांत करने का प्रयास किया। काफी मशक्कत के बाद पुलिस की मौजूदगी में गैस वितरण प्रक्रिया को दोबारा शुरू कराया गया, जिसके बाद हालात धीरे-धीरे सामान्य हुए और जाम खुलवाया गया।

यह बोले एजेंसी संचालक: *गैस एजेंसी संचालक एडवोकेट प्रवीण ने पूरे मामले में सफाई देते हुए कहा कि उपभोक्ताओं की शिकायतों को संबंधित कंपनी के संज्ञान में डाल दिया गया है और जल्द ही समस्या का समाधान किया जाएगा। उन्होंने बताया कि शनिवार को एजेंसी के पास कुल 107 गैस सिलेंडर उपलब्ध थे, जिनमें से करीब 30 सिलेंडर वितरित कर दिए गए। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि रविवार, 29 मार्च को नई सप्लाई आने की संभावना है, जिससे स्थिति में सुधार होने की उम्मीद है।*

नारनौल के सोमेश बने खेलो इंडिया में शूटिंग डायरेक्टर

नारनौल। खेल एवं युवा कार्यक्रम विभाग के तत्वावधान में भारतीय तीरंदाजी संघ के सौजन्य से रायपुर (छत्तीसगढ़) में 30 मार्च से 3 अप्रैल तक खेलो इंडिया के तहत जनजातीय खेलों का आयोजन किया जाएगा। इलाके के लिए बड़े गौरव की बात है कि इन खेलों के संचालन के लिए जारी 25 सदस्यीय सूची में नारनौल के मोहल्ला जमालपुर निवासी तीरंदाज सोमेश को हरियाणा की टीम का शूटिंग निदेशक नियुक्त किया गया है। खास बात यह है कि हरियाणा प्रदेश से इस सूची में केवल सोमेश को ही यह जिम्मेदारी सौंपी गई है। सोमेश की नियुक्ति से परिवार और परिचितों में खुशी का माहौल है। परिजनों ने इसे जिले और प्रदेश के लिए गर्व की बात बताते हुए उन्हें बधाई दी है। वहीं उनके मित्रों और खेल प्रेमियों ने भी उन्हें शुभकामनाएं दी। बता दें कि सोमेश इससे पहले भी राष्ट्रीय और प्रदेश स्तर की तीरंदाजी प्रतियोगिताओं में विभिन्न जिम्मेदारियां निभा चुके हैं। हालांकि खेलो इंडिया जैसी राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में शूटिंग निदेशक के रूप में नियुक्ति मिलना उनके लिए बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है।

वर्तमान में सोमेश अपनी तीरंदाजी अकादमी के माध्यम से युवाओं को प्रशिक्षण दे रहे हैं और उन्हें प्रदेश व राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए तैयार कर रहे हैं। उनकी अकादमी से कई खिलाड़ी विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेकर जिले का नाम रोशन कर चुके हैं। अपनी नियुक्ति पर सोमेश ने भारतीय तीरंदाजी संघ के अध्यक्ष एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा, महासचिव वीरेंद्र सचदेवा, कोच सुरेंद्र शर्मा सहित अन्य पदाधिकारियों का आभार जताया है। उन्होंने कहा कि यह जिम्मेदारी उनके लिए गर्व की बात है और वे इसे पूरी निष्ठा के साथ निभाएंगे।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक,रविवार 29 मार्च 2026

जीवन की दिशा बदल देगा जापानी दर्शन
मिलेगी अच्छी सेहत-खुशी और सुकून

शांति पसंद करने वाले खुशहाल-समृद्ध देश जापान के लोगों का जीवन दर्शन ही ऐसा है, जो उन्हें बेहतर स्वास्थ्य और भरपूर सुकून देता है। जापानी जीवन दर्शन के कुछ सरल सिद्धांत अपनाकर आप भी अपने जीवन में खुशहाली के साथ सफलता भी हासिल कर सकते हैं। जापानी दर्शन के ऐसे ही कुछ सिद्धांतों के बारे में जानिए।

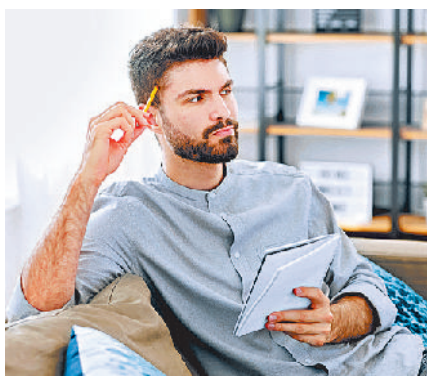

{ कवर स्टोरी
शिखर चंद जैन }

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में हर कोई सफलता के साथ-साथ सुकून और शांति की चाहत भी रखता है। लेकिन समृद्धि और सामाजिक प्रतिष्ठा के पीछे भागते हुए हम अकसर उस सबसे कीमती चीज को खो देते हैं, जिसे 'सुकून' कहते हैं। गलत खान-पान, बढ़ती मानसिक-शारीरिक बीमारियां, तनाव, अकेलापन और हर वक्त मन में कुछ अधूरा-सा महसूस होना, आधुनिक समय में लगभग हर व्यक्ति की समस्या बन चुकी है। ऐसे में सदियों पुराने जापानी जीवन दर्शन से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं।

हारा हाची बु सेहत-दीर्घायु का आहार मंत्र

जापानी स्वास्थ्य दर्शन का एक गोल्डन रूल है 'हारा हाची बु'। इसका सरल अर्थ है, 'केवल तब तक खाएं, जब तक आपका पेट 80 प्रतिशत न भर जाए।' यह सिद्धांत हमें 'ओवर ईटिंग' से बचाता है। वैज्ञानिक रूप से, मस्तिष्क को पेट भरने का संकेत मिलने में लगभग 20 मिनट लगते हैं। जब हम 80 प्रतिशत पर रुक जाते हैं, तो हम वास्तव में अपनी भूख के अनुसार सटीक मात्रा में खाते हैं। यह आदत हमें मोटापे, हृदय रोग और मधुमेह को दूर रखती है। जापान के प्रांत ओकिनावा के लोगों की लंबी उम्र का एक बड़ा कारण इस जीवन दर्शन को माना जाता है।

शोकूनिन अपने काम में रुचि लेना

जो लोग अपने पेशे या व्यवसाय को बोझ समझते हैं और अपनी किस्मत को कोसते हुए इसे किसी तरह निपटाने की मानसिकता रखते हैं, वे न तो प्रोफेशनल फ्रंट पर सफल हो पाते हैं न सुखी रहते हैं। ऐसे में आपको जापानी दर्शन 'शोकूनिन' समझना चाहिए। इसका अर्थ केवल 'कारीगर' से संबंधित नहीं है, बल्कि यह एक दृष्टिकोण है। एक शोकूनिन अपने काम को पूर्णता के साथ करने के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर देता है, चाहे वह सुशी जैसी डिश बनाना हो या जूते की सिलाई करना हो। इसमें हमारे काम के प्रति गहरी जिम्मेदारी का भाव निहित होता है। यह दर्शन हमें सिखाता है कि काम केवल पैसा कमाने का जरिया नहीं, बल्कि अपने व्यक्तित्व को निखारने का एक साधन भी है। जब हम शोकूनिन भाव से काम करते हैं, तो काम बोझ नहीं, बल्कि आनंद का जरिया बन जाता है।

काइजन छोटे सुधारों का जादू महसूस करें

जापानी दर्शन काइजन का अर्थ है-बेहतरी के लिए बदलाव। अकसर हम सोचते हैं कि जीवन बदलने के लिए रातों-रात कोई बड़ा परिवर्तन करना होगा। लेकिन काइजन कहता है कि आप हर दिन स्वयं में केवल एक प्रतिशत सुधार करें। जैसे आदतों में, अनुशासन में, नई चीजें सीखने में, रिश्तों में। ये छोटे-छोटे सुधार साल के अंत में आपको एक नया इंसान बना देंगे। टोयोटा जैसी कंपनियों की सफलता में बड़ी भूमिका निभा चुकी यह जीवन पद्धति, व्यक्ति के रूप में हमें भी नई ऊंचाइयों पर ले जाती है।

वाबी-साबी अपूर्णता में सुंदरता की तलाश

हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं, जहां 'परफेक्ट' दिखने का जुनून हम में से अधिकतर लोगों पर हावी है। जापानी दर्शन 'वाबी-साबी' इसके विपरीत बात कहता है। यह हमें सिखाता है कि कुछ भी स्थायी नहीं है और कुछ भी पूर्ण नहीं है। पुराने पत्थरों पर जमी काई या दरार पड़े मिट्टी के बर्तनों में भी एक इतिहास और सुंदरता होती है। यह दर्शन हमें अपनी कमियों को स्वीकार करना सिखाता है। जब हम अपनी 'अपूर्णता' को स्वीकार कर लेते हैं, तो अनावश्यक सामाजिक प्रदर्शन का अनावश्यक बोझ उतर जाता है।

किंतसुगी जख्मों का स्वर्ण श्रृंगार

जापान में जब कोई मिट्टी का बर्तन टूटता है, तो उसे फेंकने के बजाय सोने की परत से जोड़ा जाता है। इसे 'किंतसुगी' कहते हैं। यह हमें सिखाता है कि हमारे जीवन के घाव, असफलताएं और बुरे अनुभव हमें कमजोर नहीं, बल्कि और भी कीमती बनाते हैं। टूटने के बाद जब हम खुद को फिर से जोड़ते हैं, तो हम पहले से कहीं ज्यादा मजबूत, सुंदर और अद्वितीय होकर उभरते हैं।

शिनरिन-योकू प्रकृति की मौन चिकित्सा

जापानी लोग 'फॉरेस्ट बाथिंग' में विश्वास रखते हैं। इसका अर्थ है प्रकृति के माहौल को अपनी पांचों इंद्रियों से महसूस करना। मोबाइल, टीवी, लैपटॉप को छोड़कर नेचर के करीब समय बिताना एक कारगर चिकित्सा है। नेशनल ज्योग्राफिक के शोध के अनुसार, पेड़ों के बीच समय बिताने से तनाव का हार्मोन 'कोर्टिसोल' कम होता है और इम्यूनिटी बढ़ती है।

गमन धैर्य और गरिमा का संगम

जापानी दर्शन 'गमन' का अर्थ है प्रतिकूल परिस्थितियों में भी धैर्य बनाए रखना। चाहे सुनामी आए या व्यक्तिगत संकट, जापानी समाज विलाप करने के बजाय शांत रहकर पुनर्निर्माण में जुट जाता है। यह दर्शन हमें सिखाता है कि सहनशीलता का अर्थ हार मानना नहीं, बल्कि कठिन समय में गरिमा के साथ अडिग रहना है।

इकिगाई सुबह जागने का ठोस कारण

जापान के ओकिनावा द्वीप को 'ब्लू जोन' कहा जाता है, जहां लोग 100 साल से अधिक जीते हैं। उनकी लंबी आयु का रहस्य है-इकिगाई के अनुसार जीना। इकिगाई का अर्थ है, जीवन जीने का उद्देश्य। यह चार स्तंभों पर टिका होता है। आप क्या पसंद करते हैं, आप किसमें कुशल हैं, दुनिया को इससे क्या मिलेगा और आपको किस काम के लिए पैसे मिल सकते हैं? फोर्ब्स के अनुसार, जिस दिन व्यक्ति को अपनी इकिगाई मिल जाती है, उसके जीवन से बोरियत, ऊब, तनाव और 'रिटायरमेंट' जैसे शब्द गायब हो जाते हैं, क्योंकि वह ऐसा काम कर रहा होता है जिससे उसे प्यार होता है।

जापानी दर्शन के ये सरल सिद्धांत अगर आप अपनाकर जीवन जीना सीख लें तो आपको जीवन में भरपूर खुशी और सुकून मिलेगा। *

सोलो एजिंग बढ़ती उम्र में जिंदगी का भरपूर मजा

अभी तक यही माना जाता रहा है कि सेवानिवृत्त और दायित्वों से मुक्त होने के बाद बुजुर्ग लोग अकेलेपन-उदासी भरी जिंदगी जीते हैं। लेकिन कई अध्ययनों से साबित हुआ है कि बुजुर्ग अब सोलो एजिंग को खूब एंज्वॉय करना सीख गए हैं। अब वे उदास नहीं हर पल को खुल कर जीते हैं।

{ लाइफस्टाइल
डॉ. मोनिका शर्मा }

एक ताजा अध्ययन में बुजुर्गों से जुड़ा यह निष्कर्ष सामने आया है कि उम्रदराज लोग अब शिकायतों के बजाय खुद को संभालने की राह चुन रहे हैं। स्टडी में शामिल अधिकतर वरिष्ठजनों ने बताया कि वे पांच साल से ज्यादा समय से अकेले रह रहे हैं। उम्र के इस पड़ाव पर जिंदगी को मैनेज करने में आने वाली परेशानियों को भूलकर उन्होंने अकेले रहना चुना है। सोलो एजिंग के इस सफर में अपने जीवन से खुश रहने वाले बुजुर्गों का आंकड़ा ज्यादा है। एजवेल फाउंडेशन की इस रिपोर्ट के मुताबिक हमारे देश में सोलो एजिंग का चलन तेजी से बढ़ रहा है। अकेले रहने वाले बुजुर्गों में 46.9 फीसदी सोलो एजर्स अपनी जिंदगी से खुश हैं, जबकि 41.5 प्रतिशत असंतुष्ट हैं। 10,000 बुजुर्गों को लेकर की गई यह स्टडी उम्रदराज लोगों के मन और जीवन का बदलता खाका हमारे सामने रखती है।

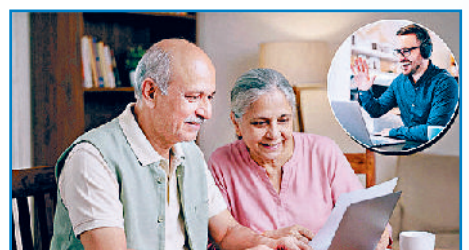

शिकायत नहीं एडजस्टमेंट की सोचः बच्चों के करियर के लिए विदेश या दूसरे शहरों में जाने के बाद अकेले रह रहे बुजुर्ग, दोषारोपण के बजाय अपनी देखभाल खुद ही करने की राह चुन रहे हैं। यह सच है कि संयुक्त परिवारों के टूटने से घर के बड़े सदस्यों में अकेलापन बढ़ा है पर वे अपने आप को बिजी रखना भी सीख रहे हैं। दूर रहने वाले बच्चों से जुड़े रहने के लिए गैजेट्स को यूज करना सीख रहे हैं। बुजुर्ग यह समझते हैं कि उनके बच्चे चाहकर भी हर समय उनके साथ नहीं रह सकते। यही वजह है कि इन हालातों में तनाव में घिरने के बजाय वे खुशी-खुशी जीवन से जूझने के रास्ते पर चलने लगे हैं। सोलो एजिंग का यह ट्रेंड बड़े-बुजुर्गों की बदलती लाइफस्टाइल से जुड़े इसी पहलू की तस्दीक करता है।

सक्रियता को प्राथमिकताः सुखद यह है कि सोलो एजिंग का ट्रेंड कोई थोपे जाने वाला चलन नहीं है। अकेले रहने वाले बुजुर्ग बहुत-सी परेशानियों का सामना करने के बावजूद खुद को सक्रिय रखने के फ्रंट पर जी-जान से जुटे रहते हैं। थकते कदमों के बावजूद अपनी जिम्मेदारियों का बोझ नहीं, बल्कि सक्रिय रहने का बहाना मानते हैं। अकेले सब कुछ मैनेज करने के दबाव को एक्टिव और सधी हुई जीवनशैली के रूप में देखने लगे हैं। इस उम्र में सेहत और सामाजिक जीवन से जुड़ी बहुत-सी उलझनों के बीच भी अपने मन को संभालने का जतन वे खुशी से कर रहे हैं। किसी भी तरह के व्यायाम, वॉकिंग, योग आदि के लिए समय निकालते हैं। एक्टिव एजिंग वाली जीवनशैली, उनको स्वस्थ रखने में भी अहम भूमिका निभाती है। वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन के मुताबिक एक्टिव एजिंग, बुढ़ापे को एक प्रोडक्टिव और खुशनुमा अनुभव बनाने की स्ट्रेटजी है, न कि इसे अंत मानने की। मौजूदा दौर में बुजुर्ग इस खुशनुमा ट्रांसफॉरमेशन के लिए तकनीक की मदद भी ले रहे हैं। ऑनलाइन सुविधाओं से लेकर अपने बच्चों और रिश्तेदारों से जुड़े रहने तक, बुजुर्गों ने तकनीक के नए रंगों को सहजता से अपनाया है।

कर रहे आजादी का एहसासः असल में सोलो एजिंग के चलन से आत्मनिर्भर बनने का भाव भी जुड़ा है। अपनी जिंदगी को अपने अंदाज में जीने से आजादी का गहरा एहसास भी जुड़ा है। यही वजह है कि अकेलेपन और हेल्थ से जुड़ी बहुत-सी चुनौतियों के बावजूद बुजुर्गों का एक बड़ा वर्ग यानी 46.9 प्रतिशत बुजुर्ग इन हालातों को स्वतंत्र रूप से अपना जीवन जीने के तौर पर भी देख रहा है। इसी एक पॉजिटिव सोच के चलते उम्रदराज लोग अकेले रहकर भी अपने जीवन से खुश हैं। इस स्टडी के मुताबिक 31 फीसदी से ज्यादा बुजुर्गों ने फाइनेंशियल और सोशल स्वतंत्रता के लिए अकेले रहने का विकल्प चुना है। वहीं 26.7 फीसदी का कहना है कि परिवार के युवा मेंबर्स के बाहर जाने से वे अकेले रह रहे हैं। नई पीढ़ी के दूर जाने को लेकर कोई शिकायत करने के बजाय बुजुर्ग इसे इंडिपेंडेंट रहने के अवसर की तरह देखने लगे हैं। शारीरिक रूप से नहीं भावनात्मक फ्रंट पर भी बुजुर्ग अब दूसरों पर निर्भर नहीं रहना चाहते। उम्रदराज लोगों के लिए यह स्वतंत्रता उनके सुकून से भी जुड़ी है। *

{ व्यंग्य / राजा चौरसिया }

बने रहो पगला...

'बने रहो पगला, काम करे अगला' की रीति-नीति से प्रीति का रवैया आज सुपरहिट हो चुका है। आप ऐड़ा बनकर पेड़ा खाते रहेंगे और जो बुद्धिमान हैं, काम में खपते और मन ही मन कुढ़ते रहेंगे।

यह सेंट पर्सेंट पेटेंट सत्य है कि एकरसता से नीरसता ही उपजती है। पतझड़ के बाद ही वसंत वाली बहार की भरमार आती है। इसी प्रकार बीमार के लिए अनार परोसने के क्रिया-कलाप का प्रदर्शन अनिवार्य कार्य है। यदि उत्सव न होते तो ढेर सारी सुख- सुविधाओं के रहते हुए भी खुशी के अभाव में नदी किनारे घोंघा प्यासा की कहावत ही चरितार्थ होती रहती। जैसे रात के बाद ही प्रभात आता है, अमावस्या के उपरांत ही पूर्णिमा होती है। इसी प्रकार मूर्खता के पश्चात ही विद्वता का अवतरण होता है। कीचड़ के बिना कमल की कल्पना, धुएं के बादलों से बरसात की सरासर झूठी कल्पना सरीखी है। हार्ट को रुचने वाले शॉर्ट और स्मार्ट शब्दों में यह डंके की चोट पर कहा जा सकता है कि मूर्खता या मूढ़ता ही विद्वता की मातेश्वरी होती है। हाथी के दांत के आचरण वाले उदाहरण हवा-पानी की तरह यत्र-तत्र, सर्वत्र व्याप्त हैं। इसकी महत्ता को समझते हुए ही कुछ चतुर चालाक लोग बुद्धिमान होते हुए भी मूढ़ बने रहते हैं। इसीलिए संयोग नहीं बल्कि दुर्योग है कि असली और फसली मूर्खों से ज्यादा नकली मूर्खों की तादाद बेमियाद बढ़-चढ़ रही है। अत्याधुनिकता की मानसिकता एवं प्रासंगिकता को प्राथमिकता देने से नकली मूर्खों या धूर्तों की बाढ़ खासी प्रगति पर है। झूठे शुभचिंतकों तथा सच्चे अशुभचिंतकों के इस काबिलेगौर दौर में चातुर्य का प्राचुर्य रहते हुए भी दूसरों के सामने मूर्ख, बुद्धू, घुग्घू और उल्लू बने रहने के कायदे से फायदे ही फायदे हैं। मन से थू-थू करते हुए भी मुंह से आई लव यू कहना अवसरवाद का बढ़िया अपडेट सर्टिफिकेट है। मीठे गवाक्ष से तीखे कटाक्ष करने का बेहतरीन एवं हसीन आइडिया है। बुद्धिजीवी को मित्र बनाना मूर्खता है, लेकिन किसी मूर्ख को बुद्धिमान होने का आभास कराना सबसे कारगर बुद्धिजीविता है। 'बने रहो पगला, काम करे अगला' की रीति-नीति से प्रीति का रवैया आज सुपरहिट हो चुका है। घर, दफ्तर हो या आस-पड़ोस सरल से सरल काम भी न कर पाने का प्रमाण दिखाकर आपको मूर्ख घोषित कर दिया जाएगा तो आगे कभी कोई काम करने की जिम्मेदारी आपको नहीं मिलेगी। आप ऐड़ा बनकर पेड़ा खाते रहेंगे और जो बुद्धिमान हैं, काम में खपते और मन ही मन कुढ़ते रहेंगे। मूर्ख न होकर भी मूर्ख बने रहने से ही दांपत्य जीवन की कुशलता विशेष तो नहीं, मगर शेष बची ही रहती है। जान-बूझकर उल्लू यानी गृहलक्ष्मी के वाहन बने रहने से गृहस्थी की गाड़ी सरपट दौड़ती रहती है। ज्वालामुखी को चंद्रमुखी अर्थात् लालमिर्ची को मिश्री कहने का यह नीक-सलीका भरपूर स्वागतेय है। विद्वता झाड़ते हुए तर्क, वितर्क और कुतर्क से बेकार का भेजा भंजन ही होता है, जबकि जन्म से ही मूर्ख पैदा हुए उच्च पदासीन मंत्री या अफसर को इंटेलीजेंट, ब्रिलिएंट तथा डिलीजेंट होने का आभास कराते रहने से अपना उल्लू सीधा होता रहता है। जनता का सेवक बनकर महानुभाव कितनी मलाई खाते हैं, यह सेवा करवाने वाली जनता खूब जानती और समझती है। दरअसल, जनतंत्र में तो जनता मूर्ख न होकर भी मूर्ख बनती ही रहती है। उसके लिए कोई खास दिन नहीं, हर दिवस सहर्ष मूर्ख दिवस ही होता है। मूर्ख दिवस वास्तव में उन लोगों का ही उत्सव है, जो दीन, हीन और खुद को मूर्ख बताकर दूसरों को मूर्ख बनाते हैं, अपना काम निकलवाते हैं। *

विज्ञापन...
इंजेक्शन की नवीन तकनीक से स्पाइन रोगों का उपचार
नोट :- वरिष्ठ नागरिकों (60 वर्ष के ऊपर) का उपचार मात्र 12 हजार रुपए में।
सर्जरी के बिना ही सिर्फ इंजेक्शन तकनीक के जरिये स्पाइन (रीढ़) रोगों का बेहतर और विश्वसनीय उपचार विश्वविख्यात डॉ. प्रमोद पहारिया द्वारा ग्वालियर में हो रहा है। आइये जानते हैं इस तकनीक के असाधारण लाभ–

केन्द्रीय मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया जी से स्पाइन के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए डॉ प्रमोद पहारिया अवार्ड प्राप्त करते हुए।

दोबारा दबाव आ जाता है तो उसमें भी यह तकनीकी कारगर है।

किस उम्र के लिये यह चिकित्सा है ?
15 से 85 वर्ष के मरीजों के लिये।

इस ट्रीटमेंट की कितनी बार आवश्यकता होती है?
सिर्फ एक ही बार पर्याप्त है।

सर्जरी की अपेक्षा इस तकनीक के क्या फायदे हैं?
सर्जरी के दौरान पैरालिसिस, पैलाप्लेजिया, ब्लैडर एवं बोवेल के कंट्रोल में क्षति, पैरों में कमजोरी, इंफेक्शन, इंप्लांट फैलियर जैसे जो कॉम्पिलकेशन देखने को मिलते हैं, वैसा इसमें खतरा नहीं है।

किन मरीजों का इलाज इस तकनीक से संभव है?
डिस्क प्रोलेप्स जैसे L4-L5, L5-S1, साइटिका, लंबर या सर्वाइकल रेडीक्युलोपैथी, डिजरनेरेटिव डिस्क, फैसिट जॉइन्ट सिंड्रोम, माइलोपैथी, लंबर कैनाल स्टेनोसिस, स्पॉन्डिलाइटिस आदि में कारगर है।

जो रोगी ऑपरेशन करवा चुके हैं उसमें भी यह कारगर है ?
यदि ऑपरेशन के बाद दबाव बना रहता या

कितने समय में रोगी घर जा सकता है?
एक घण्टे बाद ही घर जा सकता है। जबकि सर्जरी में 3 माह तक रोगी को अपने काम से अलग रहकर आर्थिक क्षति उठाना पड़ती है।

इस ट्रीटमेंट की सफलता की दर कितनी है?
90 से 95% सफल है। NBC@

इस ट्रीटमेंट का असर कब तक रहता है?
इसमें जड़ से इलाज होता है।

क्या यह स्टेरॉइड इंजेक्शन है?
नहीं, यह एक भ्रम है। यह एक सेफ अमेरिकन प्रोसीजर है, जो एक विशेष मशीन की निगरानी में किया जाता है।

डॉ. प्रमोद पहारिया
स्पाइन सर्जन
MBBS, D.Ortho, DNB, M.Ch. (Ortho)
पूर्व सर्जन- सर गंगाराम हॉस्पिटल एवं इंडियन स्पाइनल इंज्यूरी सेन्टर, नई दिल्ली
देहली हॉस्पिटल, ओल्ड श्री टॉकीज, बारादरी, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)
समय : दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक
व्हाट्सएप पर रिपोर्ट भेजकर ही संपर्क करें
सम्पर्क – 7354858466 | www.nonsurgicalspinecentre.in

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

मेरे लिखने की मेज

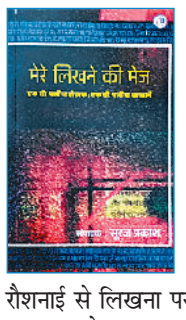

हाल में वरिष्ठ साहित्यकार सूरज प्रकाश के संपादन में 'मेरे लिखने की मेज' पुस्तक छपकर आई है। इसमें नई और वरिष्ठ पीढ़ी के कुल मिलाकर 125 लेखकों की उनके लेखन से जुड़ी दास्तानें दर्ज हैं। यह किताब पढ़कर लेखन प्रक्रिया को अलग-अलग दृष्टिकोणों से समझा जा सकता है। कोई रचना लिखने की शुरुआत कैसे होती है, उसके लिए अनुकूल स्थिति या वस्तुएं क्या होती हैं, लिखने के पहले और उसके बाद किस तरह का अनुभव होता है, कौन से कारण लिखने के लिए किसी लेखक को विवश करते हैं? ऐसे तमाम सवालों के जवाब किताब में शामिल लेखकों ने दिए हैं। वरिष्ठ लेखक असगर वजाहत अपने लेखन के बारे में कहते हैं, 'सफेद कागज पर काली रौशनाई से लिखना पसंद करता हूं। सफेद को काला करने का जुनून सा उठता रहता है। सफेद कागज मुझे बेचैन कर देता है।' अपने लेखन के बारे में आकांक्षा पारे कहती हैं, 'मुझे रात की जरूरत होती है, जब मुझे पता है, कोई फोन नहीं करेगा, दरवाजे की कोई घंटी नहीं बजेगी।' वरिष्ठ कथाकार प्रकाश मनु लेखन को पूजा-अर्चना की तरह पवित्र कर्म मानते हैं। वह कहते हैं, 'अपने कमरे के जिस कोने में बैठकर मैं लिखता-पढ़ता हूं, वहां गंगा, यमुना, सरस्वती तीनों नदियां बहती हैं। इसलिए उससे पवित्र स्थान तो कोई और हो ही नहीं सकता।' वरिष्ठ कवि लीलाधर मंडलोई अपनी रचना प्रक्रिया के बारे में कहते हैं, 'लिखते वक्त अपने संगतकारों यानी डायरी, कागज, पेन और लिखने की आधार जगह से संगत बनाता हूं... और मैं आगत रचना के सामने विनत भाव से बैठ जाता हूं।'

भले ही यह किताब किस्से, कहानी या कविता की नहीं है लेकिन इसे पढ़ने के दौरान रोचक कहानियों के पढ़ने जैसा ही आनंद आता है। *

पुस्तकः मेरे लिखने की मेज, संपादकः सूरज प्रकाश, मूल्यः 449 रुपए, प्रकाशकः अद्विक पब्लिकेशन, दिल्ली

रोचक
अंजू जैन

अप्रैल फूल-डे स्पेशल

फर्स्ट अप्रैल यानी अप्रैल फूल डे पर लोग एक-दूसरे के साथ प्रैंक कर खूब एंज्वॉय करते हैं। अतीत में इस मौके पर कुछ मशहूर कंपनियों, टेलीविजन और रेडियो स्टेशंस ने ऐसे प्रैंक्स किए, जिसकी पूरी दुनिया में चर्चा हुई। यहां ऐसे ही कुछ चर्चित अप्रैल फूल प्रैंक्स के बारे में बता रहे हैं।

दुनिया भर में मशहूर हुईं ये मजेदार शरारतें

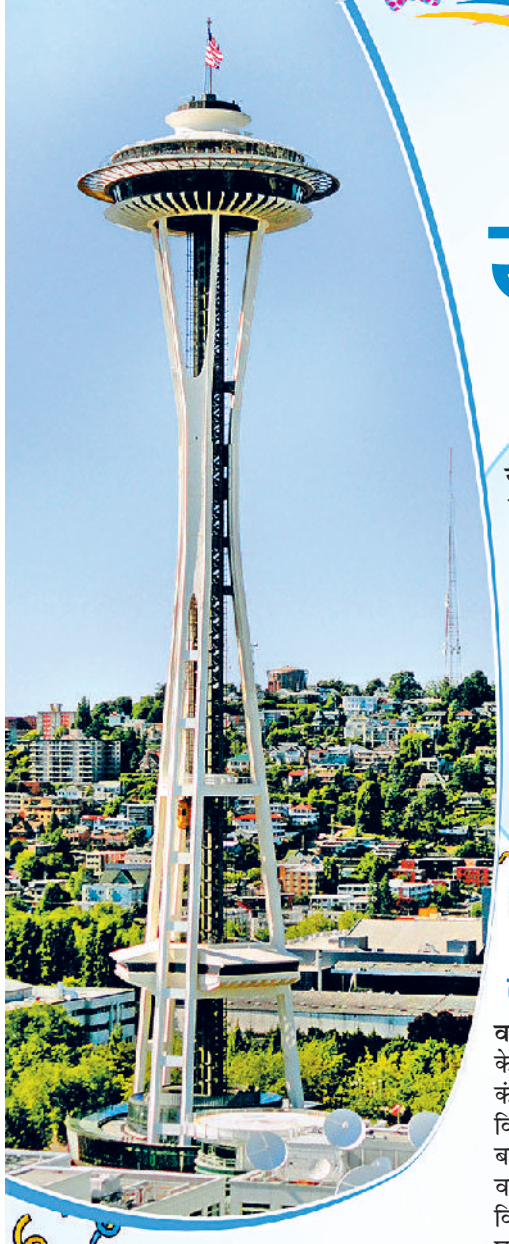

स्पेस नीडल गिरने की खबर

यह प्रैंक 1 अप्रैल 1989 को शाम के समय टीवी पर प्रसारित किया गया था। सिएटल के एक स्थानीय स्केच कॉमेडी शो, 'ऑलमोस्ट लाइव!' ने किंग टीवी पर एक विशेष रिपोर्ट प्रसारित की थी। रिपोर्ट में गंभीरता से दावा किया गया कि शाम 6:53 पर वाशिंगटन के सिएटल में स्थित स्पेस नीडल गिर गई है। शो ने टॉवर के गिरने की फर्जी तस्वीरें और चश्मदीदों के झूठे इंटरव्यू भी दिखाए। यह प्रैंक इतना विश्वसनीय लगा कि पूरे सिएटल में दहशत फैल गई। लोगों ने घबराहट में इमरजेंसी सेवाओं पर इतने फोन किए कि लाइनें ठप हो गईं। यहां तक कि टॉवर के आस-पास रहने वाले लोग भागने लगे। स्थिति बिगड़ने के बाद, चैनल को तुरंत स्पष्ट करना पड़ा कि यह सिर्फ एक मजाक था। बाद में, शो के निर्माताओं और चैनल को इस प्रैंक के लिए सार्वजनिक रूप से माफी मांगनी पड़ी थी। *

टूथपेस्ट से बर्गर की स्मेल

साल 2017 में फास्ट-फूड चेन बर्गर किंग ने दावा किया कि उन्होंने एक ऐसा टूथपेस्ट बनाया है, जिसमें एक्टिव हॉपर अर्क है, इसके कारण आपके मुंह से हमेशा बर्गर की खुशबू आएगी। लोग ब्रश करने के बाद भी अपने पसंदीदा बर्गर के स्वाद का आनंद ले सकेंगे। विज्ञापन में बताया गया कि इसमें 'व्हाइटनिंग अनियन' (सफेद करने वाले प्याज), 'डेली फ्रेश टोमैटो' (ताजा टमाटर) और एंटी-कैविटी स्टेक (कैविटी रोकने वाला मांस) जैसी चीजें शामिल हैं। इस प्रैंक को असली दिखाने के लिए बर्गर किंग फ्रांस और विज्ञापन एजेंसी बजमैन ने एक 60 सेकेंड का कमर्शियल वीडियो भी जारी किया था। यह प्रैंक मार्च के अंत में (29-31 मार्च) शुरू किया गया था ताकि 1 अप्रैल तक लोगों को भ्रमित किया जा सके। यह केवल एक मजेदार विज्ञापन अभियान था और बर्गर किंग ने कभी-भी ऐसा कोई टूथपेस्ट बाजार में नहीं बेचा। *

लेफ्ट-हैंडेड बर्गर

वर्ष 1998 में एक अप्रैल के आस-पास बर्गर किंग कंपनी ने अखबारों में विज्ञापन दिया कि उन्होंने बाएं हाथ से काम करने वाले लोगों के लिए एक विशेष बर्गर बनाया है, जिसमें सभी मसाले 180 डिग्री घुमाकर रखे गए हैं। यह सुनकर हजारों लोग इसे ऑर्डर करने लगे। बाद में पता चला कि यह प्रैंक था। *

हूटर्स वेट्रेस और योडा

वर्ष 2001 में घटित हुई एक घटना, जो एक मजाक के रूप में शुरू हुई थी, लेकिन बाद में यह कानूनी लड़ाई में बदल गई थी। इसे 'टॉय योडा' केस के रूप में जाना जाता है। हुआ यह कि अप्रैल 2001 में, पनामा सिटी बीच, फ्लोरिडा के हूटर्स रेस्तरां के मैनेजर ने अपनी वेट्रेसेस के बीच बीयर बेचने की एक प्रतियोगिता रखी। मैनेजर ने वादा किया कि जो सबसे ज्यादा बीयर बेचेगी, उसे इनाम में एक नई टोयोटा (कार) दी जाएगी। जोडी बेरी नाम की वेट्रेस ने सबसे ज्यादा बिक्री की और प्रतियोगिता जीत ली। जब इनाम देने का वक्त आया, तो मैनेजर ने जोडी की आंखों पर पट्टी बांधी और उसे पार्किंग लॉट में ले गया। लेकिन वहां कोई कार नहीं थी। इसके बजाय उसे 'स्टार वार्स' फिल्म के पात्र योडा का एक खिलौना थमा दिया गया। जोडी को यह मजाक बिल्कुल पसंद नहीं आया। उसने नौकरी छोड़ दी। यही नहीं रेस्तरां पर धोखाधड़ी और अनुबंध तोड़ने का मुकदमा भी दायर कर दिया। *

स्क्रीन में सुगंध

साल 2013 में गूगल ने अपने एक नए फीचर 'गूगल नोज' के जरिए दावा किया था कि अब लोग सर्च इंजन के माध्यम से चीजों को सूंघ भी सकेंगे। दावा किया गया कि उनके पास 15 मिलियन से अधिक सुगंधों का डेटाबेस है। गूगल यूजर्स को इसका अनुभव लेने के लिए कहा गया कि वे सर्च बार में जाकर कुछ सर्च करें और फिर अपने डिवाइस की स्क्रीन के करीब जाकर सूंघें। इसमें 'नई कार की महक', 'गीले कुत्ते की महक' और यहां तक कि 'मिस्र के मकबरे' जैसी अजीबो-गरीब चीजों को सूंघने का विकल्प दिया गया था। लेकिन इसे टेस्ट करने के लिए जब लोग स्क्रीन सूंघने की कोशिश करते और कुछ महसूस नहीं होता, तो अंत में एक संदेश आता कि यह अप्रैल फूल प्रैंक था। *

पर्यटन स्थल
समीर चौधरी

स्पीति घाटी हिमाचल प्रदेश का प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। लेकिन अगर आप यहां स्वच्छ, मनोरम वादियों के बीच आध्यात्मिक शांति का अनुभव लेना चाहते हैं तो 'की गोंपा' यानी 'की मठ' जरूर जाना चाहिए। इसकी विशेषताओं पर एक नजर।

स्वर्ग जैसी अनुभूति देता है स्पीति घाटी का 'की मठ'

हिमाचल प्रदेश के स्पीति में काजा से लगभग 12 किलोमीटर की दूरी पर स्थित 'की मठ' की सैर के दौरान आपको एहसास होगा कि जैसे स्वर्ग पृथ्वी पर उतर आया है। हालांकि अपने देश और हिमाचल प्रदेश के अन्य पर्वतीय पर्यटन स्थलों की तुलना में यहां पर्यटकों की आवक कम होती है।

सबसे पुराना-बड़ा मठः लगभग 13,500 फीट की ऊंचाई पर स्थित 'की मठ' स्पीति घाटी में सबसे पुराना और सबसे बड़ा मठ है। पहाड़ के ऊपर स्थित यह मठ कई मंजिला है, जिसकी तुलना अकसर लेह के निकट स्थित आइकॉनिक थिकसे मठ से की जाती है। अपने ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व के अतिरिक्त 'की गोंपा' अपनी सुंदर संरचना और शांत वातावरण के लिए भी विख्यात है।

निर्माण और नवीनीकरणः की गोंपा का निर्माण 11वीं सदी के आस-पास माना जाता है। इस मठ का गहरा संबंध बौद्ध संत लोचेन रिनचेन जंगपो के पूजनीय अवतारों से है, जो 958 से 1055 ईस्वी के बीच हुए थे। इसकी गहरी जड़ें प्राचीन कदंपा विरासत से भी जुड़ी हैं और इसे लोचेन तुलकुस विरासत की पीठ माना जाता है। इस विरासत के माध्यम से 'की मठ' 11वीं शताब्दी के विख्यात बौद्ध विद्वान और संत अतिशा दिपांकर से भी जुड़ जाता है।

इस मठ का पुनर्निर्माण 15वीं शताब्दी के शुरू में शेरपा जंगपो ने करवाया, जो गेलुग्पा समुदाय के संस्थापक जे त्सोंगखापा के शिष्य थे। पांचवें दलाई लामा के युग में यानी 17वीं शताब्दी में इस मठ पर मंगोलों ने हमला किया, जिसके बाद यह औपचारिक रूप से गेलुग्पा स्कूल (प्रमुख तिब्बती बौद्ध संप्रदाय) का हिस्सा बन गया। फिर 1820 के लद्दाख-कुल्लू टकराव के दौरान भी इसे नुकसान पहुंचा। 1841 में डोगरा सेना और सिख सेना ने इसे काफी नुकसान पहुंचाया। 1840 के दशक में इसमें भयंकर आग भी लगी थी। 1975 में आए भूकंप की वजह से भी इस मठ को काफी नुकसान पहुंचा था। तब आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया और स्टेट पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट ने इसकी मरम्मत कराई थी।

बहुत कुछ है दर्शनीयः 'की मठ' की बाहरी सुंदरता तो मनोरम और स्वार्गिक अनुभूति देने वाली है ही, मठ के भीतर भी बहुत कुछ ऐसा है, जो दर्शनीय है।

साल 2000 में 14वें दलाई लामा ने इस मठ में एक नए विशाल असेंबली हॉल का उद्घाटन किया था। इस हॉल की दीवारों पर कुछ बहुत ही सुंदर प्राचीन पेंटिंग्स लटकी हुई हैं, जो बुद्ध के पिछले जन्मों की कहानियों को व्यक्त करती हैं। मुख्य असेंबली हॉल के सामने पूजा करने का कमरा है, जिसमें एक विशाल पूजा चक्र है। इसके अलावा पद्मसंभव और अमितायुस की प्रतिमाएं भी हैं। 'की मठ' अपनी वॉल हैंगिंग्स और ऐतिहासिक कलाकृतियों के लिए विख्यात है। मठ के टॉप फ्लोर पर जो अपार्टमेंट है, वह दलाई लामा के लिए आरक्षित है। निचले माले पर मठ की रक्षा करने वाले देवताओं को समर्पित एक मंदिर है, जबकि उसके नीचे जो एक अन्य असेंबली हॉल है, उसे छोटे आयोजनों के लिए इस्तेमाल किया जाता है। यहां दुर्लभ धर्मग्रंथ, पुरानी वॉल पेंटिंग्स और भविष्य के बुद्ध मैत्रेय की मूर्ति भी है।

यात्रा का उपयुक्त समयः 'की मठ' की यात्रा के लिए आदर्श समय मई से अक्टूबर के बीच का है, जब यहां हल्की-सुहानी ठंड पड़ रही होती है। सड़कें खुली होती हैं और स्पीति वादी की सुंदरता अपने शबाब पर होती है। इस दौरान यहां का तापमान आमतौर से 10 डिग्री सेंटीग्रेड से 25 डिग्री सेंटीग्रेड के बीच में होता है।

ठंड के मौसम में तो यहां तापमान माइनस 20 डिग्री सेंटीग्रेड तक गिर जाता है। भारी बर्फबारी के कारण सड़कें बंद हो जाती हैं। हालांकि मठ तो खुला रहता है, लेकिन उस तक पहुंचना मुश्किल हो जाता है।

जो पर्यटक सांस्कृतिक अनुभव लेने की इच्छा रखते हैं, उन्हें अपनी यात्रा की योजना जुलाई में बनानी चाहिए, जब यहां चाम उत्सव का आयोजन किया जाता है। इस उत्सव में बौद्ध भिक्षु परंपरागत मुखौटा नृत्य करते हैं। यह नृत्य बुराई पर अच्छाई की विजय के प्रतीक रूप में किया जाता है। *

मौसम में गर्माहट घुलने के साथ ही युवाओं का फैशन और ड्रेसिंग स्टाइल बदलने लगा है। बदलते हुए फैशन ट्रेंड को देखकर लगता है कि इन गर्मियों में जेंडर न्यूट्रल फैशन का क्रेज रहेगा। यंगस्टर्स को यह फैशन ट्रेंड क्यों इतना भा रहा है?

इन गर्मियों में रहेगा जेंडर न्यूट्रल फैशन का क्रेज

ट्रेंड
प्रतिमा अरोड़ा

मार्च की शुरुआत के साथ ही हल्की गर्माहट जैसे वातावरण में फैली तो कॉलेज परिसरों, कैफे और शहर की सड़कों पर एक नया फैशन ट्रेंड दिखाई पड़ने लगा। यह है जेंडर न्यूट्रल फैशन। वास्तव में यह केवल ड्रेस का बदलाव नहीं, बल्कि सोच और पहचान का बदलाव भी है। अब फैशन यह नहीं पूछता कि आप मेल हैं या फीमेल। अब फैशन यह जानना चाहता है कि आप कौन हैं? भारत के युवा विशेषकर जेन-जी और नए प्रोफेशनल्स अब ऐसी ड्रेसेस चुन रहे हैं, जो आरामदायक हों, अभिव्यक्ति के अनुकूल हों और किसी जेंडर विशेष की सीमाओं में न बंधते हों।

बदल रही है फैशन की परिभाषा

लंबे समय तक फैशन की दुनिया स्त्री और पुरुषों के दो अलग-अलग खांचों में बंटी रही है। लेकिन हाल के सालों में फैशन के बीच जेंडर की यह दूरी धीरे-धीरे धुंधली होने लगी है। आज के युवा मानते हैं, ड्रेस शरीर के लिए होती है, किसी जेंडर विशेष के लिए नहीं। दिल्ली, मुंबई, पुणे और बैंग्लुरु के कॉलेजों में यह अब आम दृश्य है कि एक ही तरह के ओवर साइज शर्ट लड़कियां भी पहनती हैं और लड़के भी। वैसे ही ढीले ट्राउजर भी दोनों पहनते खूब दिखते हैं। जेंडर न्यूट्रल फैशन अब सिर्फ बड़े शहरों और सेलिब्रिटी क्लास की ही सोच नहीं दर्शाता बल्कि यह अवधारणा छोटे शहरों से लेकर मझोले शहरों और कस्बों तक में फैल रही है।

गर्मियों के लिए है उपयुक्त

जेंडर न्यूट्रल फैशन, किसी और मौसम में चाहे दोनों के लिए उपयुक्त न हो, लेकिन गर्मी के मौसम में यह ब्वॉयज और गर्ल्स दोनों के लिए आरामदायक फैशन माना जाता है। लूज ड्रेसेस, शरीर को जहां पसीने की परेशानी से दूर रखती हैं, वहीं लिनेन और कॉटन जैसे नेचुरल फैब्रिक, त्वचा के अनुकूल होते हैं। यही कारण है कि इन गर्मियों में लिनेन की शर्ट, कॉटन कुर्ते और ढीले ट्राउजर खूब लोकप्रिय होने जा रहे हैं।

ये कलर्स रहेंगे पॉपुलर

जेंडर न्यूट्रल फैशन की पहचान केवल डिजाइन या फैब्रिक से नहीं, रंगों से भी होती है। आने वाले दिनों में ब्राइट कलर्स की जगह, बेज, व्हाइट, ग्रे, ऑलिव ग्रीन और लाइट ब्लू जैसे प्लीजेंट कलर्स का बोलबाला रहने वाला है। क्योंकि ये कलर्स हमारी आंखों के साथ-साथ त्वचा और पूरे शरीर को गर्मी से राहत देते हैं। इन कलर्स की ड्रेसेस मेल-फीमेल सभी पर सूट करते हैं।

सोशल मीडिया का रोल

जेंडर न्यूट्रल फैशन की ओर झुकाव की एक बड़ी वजह सोशल मीडिया भी है। इंस्टाग्राम, यू-ट्यूब और पिंटरेस्ट जैसे सोशल साइट्स पर हजारों युवा इन दिनों फैशन कंटेंट खूब बना रहे हैं, जो जेंडर की सीमाओं को तोड़ते हैं। अब फैशन डिजाइनर ही फैशन ट्रेंड तय नहीं करते बल्कि कॉलेज के युवा, यंग प्रोफेशनल्स और कंटेंट क्रिएटर्स भी फैशन के नए ट्रेंड सेट कर रहे हैं। एक सिंपल ओवर साइज शर्ट और लूज ट्राउजर में बनी इंस्टाग्राम की वायरल रील भी लाखों युवाओं को यह फैशन अपनाने के लिए प्रेरित कर सकती है।

कंफर्ट-स्टाइल से कहीं बढ़कर

जेंडर न्यूट्रल फैशन, केवल कंफर्ट या स्टाइल का मामला नहीं है। इसे आत्मविश्वास और स्वतंत्र सोच से भी जोड़कर देखा जाता है। यह फैशन स्टाइल युवाओं को यह संदेश देता है कि वे अपनी पहचान स्वयं तय कर सकते हैं। आज के युवा फैशन को पारंपरागत ड्रेस पहनने के नियम का पालन करने के लिए नहीं, बल्कि अपनी सोच, पसंद और स्वतंत्रता को व्यक्त करने के लिए अपना रहे हैं। यही कारण है कि जेंडर न्यूट्रल फैशन, तेजी से युवाओं की पसंद बनता जा रहा है।

बदल रही फैशन इंडस्ट्री

यंगस्टर्स की पसंद को देखते हुए, देश के प्रमुख फैशन ब्रांड्स में भी अब जेंडर न्यूट्रल यूनिसेक्स कलेक्शन की बड़ी रेंज दिखती है। कई नए स्टार्टअप्स जेंडर-न्यूट्रल ड्रेसेस पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। इससे यह स्पष्ट है कि फैशन उद्योग भी अब जेंडर न्यूट्रल जैसे बदलाव को स्वीकार कर चुका है। विशेषज्ञों का मानना है कि आने वाले वर्षों में फैशन में मैन और वुमेन की बजाय ऑल या यूनिसेक्स जैसे सेक्शन हुआ करेंगे।

कह सकते हैं कि इस साल की गर्मियां अभी से यह स्पष्ट संकेत दे रही हैं कि फैशन अब जेंडर की सीमाओं से मुक्त हो रहा है। जेंडर न्यूट्रल फैशन न्यू एज फैशन का पसंदीदा ट्रेंड बनकर उभर रहा है। *

सिने ट्रेंड
अशोक वाधवाणी

दर्शकों को खूब आती हैं पसंद हॉरर-कॉमेडी कॉम्बो फिल्में

हालांकि शुरुआती दौर से ही बॉलीवुड में हॉरर फिल्में बनती रही हैं। लेकिन बीते कुछ वर्षों से हॉरर फिल्मों में कॉमेडी का कॉम्बो दर्शकों को काफी पसंद आ रहा है। यही वजह है कि ऐसी फिल्में लगातार बन रही हैं और दर्शकों को पसंद भी आ रही हैं। ऐसी ही कुछ हॉरर-कॉमेडी फिल्मों पर एक नजर।

बीते कई वर्षों से हिंदी फिल्मों में हॉरर, थ्रिलर के साथ कॉमेडी वाला तड़का दर्शकों को खूब अट्रैक्ट कर रहा है। रहस्य-रोमांच और साफ-सुथरी कॉमेडी पसंद करने वाले दर्शक इसे सपरिवार देख सकते हैं, क्योंकि इस तरह की फिल्मों में हॉरर और कॉमेडी का कॉम्बो देखने को मिल जाता है। यह इसका प्लस प्वाइंट है।

हॉरर-थ्रिलर-कॉमेडी का कॉकटेलः कुछ वर्षों से हॉरर कॉमेडी जॉनर की फिल्मों का दौर चल पड़ा है। ऐसी मूवी में ह्यूमर और हॉरर का कॉकटेल नजर आता है। अजय देवगन की 'गोलमाल अगेन' (2017) में हॉरर और कॉमेडी के साथ-साथ इमोशनल टच भी देखने को मिला। इसी थीम पर बेस्ड 'गो गोवा गॉन' (2013) फिल्म ने भी दर्शकों को बांधे रखा। यह गोवा में फिल्माई गई हॉरर, थ्रिलर और जॉम्बिज एक्शन वाली कॉमेडी मूवी है। वर्ष 2025 में रिलीज हुई 'थाम्मा' में आयुष्मान खुराना ने बेताल (पिशाच) की भूमिका निभाई। इसी फिल्म में नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने मनुष्यों का खून चूसने वाले खतरनाक विलेन का रोल निभाया। वर्ष 2024 में रिलीज्ड 'मुंज्या' भी एक कॉमेडी हॉरर फिल्म है। कोई बड़ा स्टार नहीं होने के बावजूद इस फिल्म ने दर्शकों के दिलों में जगह बनाई। इससे काफी पहले अमिताभ बच्चन की 'भूतनाथ' (2008) और 'भूतनाथ रिटर्न्स' (2014) भी सुपरनेचुरल कॉमेडी ड्रामा फिल्में थीं। इन दोनों ही फिल्मों की कहानी में नयापन था, ताजगी थी। साथ ही कलाकारों के जानदार अभिनय और कमाल के पिक्चराइजेशन ने दर्शकों को बांधे रखा। इसीलिए ये फिल्में सफल रहीं।

'स्त्री' ने कर दिखाया कमालः साल 2018 में आई हॉरर-कॉमेडी फिल्म 'स्त्री' की सफलता ने इस ट्रेंड को सेट करने में बड़ा रोल निभाया। राजकुमार राव, श्रद्धा कपूर, पंकज त्रिपाठी जैसे कलाकारों के अभिनय से सजी इस फिल्म में हर घर के सामने लिखी लाइन 'ओ स्त्री, कल आना!' दर्शकों के दिलोदिमाग में घर कर गई। इस फिल्म के कई दृश्य दर्शकों के मन में आज भी तरोताजा हैं। 'स्त्री' की सफलता के बाद से इस तरह की फिल्मों का ट्रेंड-सा चल पड़ा। 2024 में आई 'स्त्री-2' भी दर्शकों की कसौटी पर खरी उतरी, इस फिल्म को भी बड़ी सफलता मिली।

इस साल आएगी 'भूत बंगला'ः इस साल हॉरर-कॉमेडी जॉनर में अक्षय कुमार की 'भूत बंगला' रिलीज होने वाली है। फिल्म के निर्देशक है प्रियदर्शन। ये वही प्रियदर्शन हैं, जिन्होंने साइकोलॉजिकल थ्रिलर 'भूल-भुलैया' बनाकर कैरेक्टर मोंजूलिका (विद्या बालन) को फेमस किया था। वैसे आपको बता दें कि कई दशक पहले साल 1965 में महमूद ने ब्लैक एंड व्हाइट 'भूत बंगला' बनाई थी, जिसमें हॉरर, थ्रिलर और कॉमेडी का मनोरंजक मेल था। उस दौर में ये अपनी तरह की नई पहल थी। उसे इस जॉनर की पहली फिल्म भी माना जाता है।

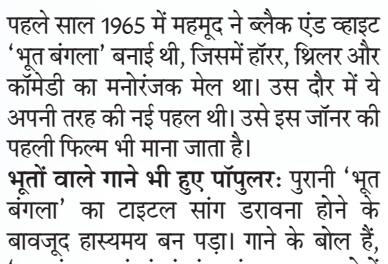

भूतों वाले गाने भी हुए पॉपुलरः पुरानी 'भूत बंगला' का टाइटल सांग डरावना होने के बावजूद हास्यमय बन पड़ा। गाने के बोल हैं, 'भूत बंगला, हां हां हां हां कहां आ गए हम दोनों।' इस गाने में महमूद और आर. डी. बर्मन के साथ भूतों को नाचते दिखाया गया है। महमूद, आर. डी. बर्मन और सुदेश की डरावनी आवाजें डराती कम, हंसाती-गुदगुदाती ज्यादा हैं। आने वाली 'भूत बंगला' में भी ऐसे ही एक गाने के बोल हैं, 'रामजी आकर सबका भला करेंगे।' इसमें अक्षय कुमार अजीबो-गरीब वेशभूषा में अजीब, अटपटी हरकतें करते हुए, भूतों के साथ नाचते-गाते दिखते हैं। दर्शकों के मन में सस्पेंस जगाने, डराने के लिए स्पेशल इफेक्ट का सहारा भी लिया गया है। यह कोई नया चलन नहीं है। ऐसे गीतों का सिलसिला काफी पहले से शुरू हो चुका है। फिल्म 'चाचा-भतीजा' (1977) में हेमा मालिनी और सोनिया साहनी पर फिल्माया गया गीत, 'भूत राजा बाहर आ जा। सीधी तरह से मान जा नहीं तो बजा दूंगी तेरा बैंड बाजा।' इसमें उनके साथ धर्मेंद्र और रणधीर कपूर भी हैं। आगे चलकर ऐसा ही गाना 'चालबाज' (1989) में श्रीदेवी और रजनीकांत पर पिक्चराइज किया गया। गाने के बोल थे, 'ओ भूत राजा फंस गई मुश्किल में, भूतों की महफिल में।' कविता कृष्णमूर्ती, सुदेश भोसले की आवाज में यह गाना मनोरंजक है। 'हाउसफुल-4' का 'द भूत सॉन्ग।' अलग-थलग अंदाज वाले गाने का रिमिक्स वर्जन है। मिका सिंह, फरहाद द्वारा गाए इस रैपनुमा गाने में बड़े, खर्चीले सेट और कई स्टार दिखाए गए हैं। इस दिलचस्प गाने को देखते-सुनते समय डर तो नहीं लगता, हां मजा जरूर आता है। इसीलिए यह गाना काफी हिट भी रहा।

हॉरर-कॉमेडी फिल्मों का फंडाः हॉरर फिल्मों में दिल दहला देने वाले दृश्य देखकर दर्शक कई बार अचंभित-भयभीत होते हैं। डर के मारे रोमांचित भी होते हैं। उसी समय उनका ध्यान कंवर्ट करने के लिए कॉमेडी सींस दिखाए जाते हैं। इससे वे भयमुक्त होकर हंसने लगते हैं। यही वजह है कि हॉरर, थ्रिलर, कॉमेडी का कॉम्बिनेशन दर्शकों को लुभा रहा है। इसी कारण धड़ल्ले से इनकी फ्रेंचाइजी फिल्में भी बन रही हैं। जैसे- 'भूल-भुलैया', 'स्त्री', 'भेड़िया', 'मुंज्या' आदि। *